Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیۡ عَنِّیۡ فَاِنِّیۡ قَرِیۡبٌ ؕ اُجِیۡبُ دَعۡوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلۡیَسۡتَجِیۡبُوۡا لِیۡ وَلۡیُؤۡمِنُوۡا بِیۡ لَعَلَّہُمۡ یَرۡشُدُوۡنَ ۱۸۷

(सूरः बकरः , आयत : 187)

अनुवाद: और जब मेरे बंदे तुझसे मेरे बारे में पूछें तो निश्चित ही मैं समीप हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ को स्वीकार करता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। अतः उन्हें भी चाहिए कि वे मेरी बात को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान+ लाएँ, ताकि वे मार्गदर्शन प्राप्त करें।

वर्ष- 10
अंक - 18
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

02 जुलकाद , 1446 हिज्री कमरी, 01 हिजरत 1404 हिज्री शम्सी, 01 मई 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

यह अल्लाह की परंपरा है कि जो लोग उसकी ओर से नियुक्त किए जाते हैं, उन्हें सताया जाता है, दुख दिए जाते हैं, कठिनाइयाँ दर कठिनाइयाँ उनके सामने आती हैं यह इसलिए नहीं होता कि वे नष्ट हो जाएँ, बल्कि इसलिए कि वे अल्लाही सहायता को आकर्षित करें

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यही अल्लाह की परंपरा है कि नियुक्त किए गए लोग सताए जाते हैं, दुख दिए जाते हैं, और उनके सामने एक के बाद एक मुसीबतें आती हैं—यह इसलिए नहीं कि वे नष्ट हों, बल्कि इसलिए कि वे अल्लाह की सहायता को अपनी ओर खींचें। यही कारण था कि आपकी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की) मक्की जीवन की अवधि, मदीनी जीवन की तुलना में लंबी थी। मक्का में तेरह वर्ष गुज़रे और मदीना में दस वर्ष। जैसा कि इस आयत से ज़ाहिर होता है कि हर नबी और ईश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्ति के साथ यही व्यवहार हुआ है कि प्रारंभ में उन्हें कष्ट दिए गए। उन्हें चालाक, धोखेबाज़, व्यापारी और न जाने क्या-क्या कहा गया। कोई भी बुरा नाम ऐसा नहीं रहा जो उन्हें न दिया गया हो। वे नबी और नियुक्त लोग हर प्रकार की बात को सहते हैं और हर दुख को सह लेते हैं, लेकिन जब अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है, तो फिर मानवता की भलाई के लिए दूसरी शक्ति प्रकट होती है।

इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हर प्रकार का दुख दिया गया और हर तरह का बुरा नाम दिया गया। अंततः आपकी एकाग्रता ने पूरी शक्ति से असर दिखाया और वह चरम पर पहुँच गई, जैसा कि आयत "اِسۡتَفۡتَحُوۡا" (उन्होंने विजय की दुआ की) से पता चलता है—और इसका परिणाम यह हुआ: "وَ خَابَ کُلُّ جَبَّارٍ عَنِیۡدٍ" यानी हर ज़ालिम और हठी की हार हुई। सारे दुष्ट और षड्यंत्र रचने वालों का अंत हो गया। यह ध्यान (दुआ और आर्त भाव) विरोधियों की शरारतों की चरम सीमा पर पहुँचने के बाद ही आता है, क्योंकि अगर यह आरंभ में ही हो जाए तो फिर तुरंत अंत हो जाए!

मक्का के जीवन में अल्लाह की एकता के दरबार में गिरना और रोना-चिल्लाना था। और यह ऐसी अवस्था तक पहुँच गया था कि देखने और सुनने वालों के शरीर में कंपकंपी दौड़ जाती थी। लेकिन अंततः मदीनी जीवन की भव्यता को देखो वो लोग

शेष पृष्ठ 10 पर

इस्लाम का अर्थ है ऐसे कर्म करना जिनसे इंसान विनाश से सुरक्षित हो जाए। अर्थात इस नाम में ही अल्लाह तआला ने हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बअसत (पैग़म्बरी) का उद्देश्य स्पष्ट कर दिया है, जो यह है कि लोग अल्लाह के ग़ज़ब से सुरक्षित हो जाएं और आपसी लड़ाई-झगड़ों से मुक्ति पा लें

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद, मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु, सूरह हज्ज़ की आयत 79 की तफ़्सीर में फरमाते हैं:

अल्लाह तआला ने इस्लाम के लिए भी ऐसा ही नाम चुना है, जो अपने अंदर बड़ी भारी खूबियाँ और हिकमतें समेटे हुए है। दरअसल, इस्लाम के जो मूल अक्षर या रूट (س-ل-م) हैं, वे अरबी भाषा में जहाँ कहीं भी एक साथ आएँगे, वहाँ उनके अर्थों में सुरक्षा या संरक्षण का भाव अवश्य मिलेगा। और ये अक्षर जिस रूप में भी बदलते जाएँ, हर रूप में सुरक्षा का अर्थ बरकरार रहता है।

जैसे कि "इस्लाम" का अर्थ होता है आज्ञाकारिता, और आज्ञाकारिता के अर्थ में अनिवार्य रूप से सुरक्षा सम्मिलित होती है। क्योंकि जब कोई व्यक्ति किसी बड़े इंसान की आज्ञा मानता है, तो स्वाभाविक रूप से वह उन कष्टों से बच जाता है जो उस बड़े व्यक्ति की ओर से पहुँच सकते थे। और फिर उसकी जान-माल की भी रक्षा की जाती है जो अधीन होता है। जो लोग बाग़ी होते हैं, वे हुकूमत की सुरक्षा में नहीं होते, बल्कि पुराने ज़माने में तो ऐसे लोगों को "आउट ऑफ लॉ" कहा जाता था, और अगर उन्हें कोई मार भी देता था तो हुकूमत कोई कार्रवाई नहीं करती थी।

फिर शब्द है, जिसका अर्थ है विपत्तियों और मुसीबतों से बचाव। इसी तरह "سَلَمَ الۡجِلۡدَ" का अर्थ होता है चमड़े की द्वाग़त कर दी और द्वाग़त भी चमड़े को सड़ने से बचाने के लिए की जाती है, यानी इसमें भी सुरक्षा का भाव है।

"سَالَمَہٗ" का अर्थ है उससे संधि की — और संधि करने में भी सुरक्षा को ध्यान में रखा जाता है। फिर "تَسَلَّمَ الشَّیۡءَ" का अर्थ है किसी चीज़ को पकड़ लेना, अपने क़ब्जे में ले लेना — और जब कोई चीज़ कब्जे में आ जाती है तो वह भी सुरक्षा में आ जाती है। इसी तरह "اِسۡتَلَمَ الزَّرۡعُ" का मुहावरा है, जिसका अर्थ है कि फसल में दाना पड़ गया। और इसमें भी सुरक्षा का भाव है, क्योंकि जब तक फसल में दाना नहीं पड़ता, किसान संतुष्ट नहीं होता, और जब दाना पड़ जाता है तो वह उसे कुछ हद तक सुरक्षित समझता है।

फिर "سَلَامٌ" अल्लाह का नाम है, जो हर प्रकार की कमी और दोष से पाक है।

शेष पृष्ठ 10 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

''अल्लाह तआला ने चाहा कि जिस प्रकार सभी विभाजित कमालात (श्रेष्ठताएँ) जो अलग-अलग नबियों में थीं, वह सब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हस्ती में एकत्र कर दी गईं, उसी प्रकार वे सारी ख़ूबियाँ और कमालात जो विभाजित किताबों में थीं, उन्हें क़ुरआन शरीफ़ में एकत्र कर दिया गया। और इसी तरह जितने भी कमालात तमाम उम्मतों में थे, वे इस उम्मत में जमा कर दिए गए। अतः ख़ुदा तआला चाहता है कि हम इन कमालात को पा लें।''

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

जमाअत अहमदिया के इतिहास में 23 मार्च का दिन अत्यधिक महत्व रखता है क्योंकि 23 मार्च 1889 को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बैअत की शुरुआत के साथ जमाअत की नींव रखी थी।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ही थे जो अल्लाह तआला के हुक्म से खड़े हुए और इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए एक "जरीउल्लाह" (अल्लाह का शेरदिल बंदा) की हैसियत से अपना किरदार अदा किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस्लाम की सेवा के कारण कुछ लोगों ने आपसे यह भी कहा कि आप हमसे बैअत लें, लेकिन क्योंकि अल्लाह तआला का उस समय तक हुक्म नहीं था, इसलिए आपने उस समय बैअत नहीं ली।

आस्मानी निशानों में एक निशान सूर्य और चंद्रग्रहण का था, जिसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि यह मेरे महदी के आगमन का ख़ास निशान है, जो रमज़ान के महीने में तयशुदा तारीख़ों पर प्रकट होगा।

अतः हमारे लिए जो थोड़ा-बहुत क़ुर्बानी का मौक़ा अल्लाह तआला ने दिया है, उससे हमें फ़ायदा उठाना चाहिए और इसके लिए अपनी जान, माल, वक़्त की क़ुर्बानी देने का जो अज़्म (संकल्प) है, उसे पूरा करना चाहिए। और बैअत के अज़्म में जो हमने यह इज़हार किया है कि ''मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सबसे ज़्यादा मोहब्बत करूँगा,'' चूंकि वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नुमाइंदे हैं, तो फिर हमें इसका अमली इज़हार भी करना होगा।

यह ज़रूरी बात है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई दुनिया में फैलनी थी और फैलेगी, क्योंकि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी में, उनके दीन की तशीरी (प्रचार) के लिए आए हैं, जो अंतिम दीन है।

चाहे यह लोग जितनी भी कोशिश कर लें कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को ख़त्म करें, लेकिन जो ज़ोर लगाते हैं, वही फैलने का ज़रिया बन जाता है।

अगर इस्लाम की मुख़ालिफ़त न होती, तो फिर मसीह मौऊद के आने की कोई ज़रूरत न होती, लेकिन हम देख रहे हैं कि आज से 136 साल पहले जब आपने दावा किया, उस समय से लेकर अब तक इसमें लगातार वृद्धि ही हो रही है।

''मुझ पर और मेरी जमाअत पर जो यह इल्ज़ाम लगाया जाता है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ातिमुन्नबीयीन नहीं मानते, यह हम पर बहुत बड़ा झूठ है। हम जिस यक़ीन, मआरिफ़त और बसीरत के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ातिमुल-अंबिया मानते और उस पर यक़ीन रखते हैं, उसका लाखवां हिस्सा भी दूसरे लोग नहीं मानते, और न ही उनमें ऐसी समझ है। वे उस हक़ीक़त और राज़ को, जो ख़ातिमुल-अंबिया की ख़त्म-ए-नुबूवत में है, समझते ही नहीं हैं... हम पूरी बसीरत से (जिसे अल्लाह तआला बेहतर जानता है) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ातिमुल-अंबिया यक़ीन करते हैं और अल्लाह तआला ने हम पर ख़त्म-ए-नुबूवत की हक़ीक़त को ऐसे अंदाज़ में खोल दिया है कि उस इरफ़ान के शरबत से जो हमें पिलाया गया है, एक ख़ास लज़्ज़त महसूस होती है, जिसका अंदाज़ा कोई नहीं लगा सकता सिवाय उन लोगों के जो इस चश्मे से सेराब हों।''

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

रमज़ान के दिनों में दुआओं के ज़रिए भी, अपने ज्ञान को बढ़ाने के ज़रिए भी, क़ुरआन करीम का इल्म सीखने के ज़रिए भी और अमली तौर पर संदेश पहुँचाने के ज़रिए भी, हमें तबलीग़ के काम में जुट जाना चाहिए ताकि हम जल्द से जल्द दुनिया में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा लहराने वाले बन सकें और दुनिया को एक ख़ुदा के सामने झुकाने वाले बन सकें।

यौम-ए-मसीह मौऊद की मुनासबत से हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुरमआरिफ़ इर्शादात की रौशनी में मसीह मौऊद की बअसत का तज़्किरा।

पाकिस्तानी अहमदियों और उम्मत-ए-मुस्लिमा के लिए दुआओं की तहरीक:

अल्लाह तआला पाकिस्तानी अहमदियों के हालात में आसानी पैदा करे। आमतौर पर मुसलमान उम्मत के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें भी अक़्ल और समझ दे और उनके हालात बेहतर करे। उन पर रहम फ़रमाए।

फ़िलस्तीनी मुसलमानों पर जो एक नया दौर-ए-ज़ुल्म शुरू हुआ है, अल्लाह तआला उन्हें भी इस ज़ुल्म से महफ़ूज़ रखे। उन पर रहम फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 मार्च 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

परसों 23 मार्च है। जमाअत अहमदिया के इतिहास में 23 मार्च का दिन बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि 23 मार्च 1889 को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बैअत की शुरुआत के साथ जमाअत की नींव रखी थी।

आपकी नियुक्ति ठीक उसी तरह अल्लाह तआला के वादे और हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार हुई थी। उस समय इस्लाम की नाव डगमगाई हुई थी, हालांकि अब भी धार्मिक दृष्टिकोण से मुसलमानों की हालत बहुत चिंताजनक है। बल्कि राजनीतिक और सांसारिक दृष्टि से भी हालत बहुत ख़राब है, जबकि बहुत से मुस्लिम देश धन से भरपूर हैं, उनके पास तेल की संपत्ति है, लेकिन उनका महत्व और सम्मान बिल्कुल समाप्त हो चुका है।

बहरहाल, उस समय जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बैअत ली, उस समय इस्लाम की जो स्थिति थी, उस पर आपका दिल ख़ून के आंसू रोता था। आपके दिल में बहुत दर्द था। इस्लाम पर लगातार हमले किए जा रहे थे, विशेष रूप से ईसाई धर्म की ओर से, लेकिन उनका कोई जवाब देने वाला नहीं था। मुस्लिम उलेमा भी

उस समय डर के मारे चुप रहते थे। बल्कि हालत यह हो गई थी कि बहुत से मुसलमान इस्लाम छोड़कर लाखों की संख्या में ईसाई धर्म अपना रहे थे।

ऐसे समय में जब मुसलमानों की यह स्थिति थी और इस्लाम पर इस प्रकार हमले हो रहे थे, तो हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ही थे जो अल्लाह तआला के हुक्म से खड़े हुए और इस्लाम की रक्षा के लिए एक बहादुर अल्लाह के सिपाही के रूप में अपनी भूमिका निभाई।

आपने उस समय भारत में मौजूद सभी धर्मों आर्य समाज, ब्रह्मो समाज, ईसाई धर्म या अन्य धर्मों या नास्तिक लोगों की ओर से इस्लाम और इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर किए जा रहे भयानक हमलों के जवाब में, बैअत लेने से पहले ही, एक क्रांतिकारी पुस्तक लिखी, बल्कि पुस्तकें लिखीं जो "बराहीने अहमदिया" के नाम से प्रसिद्ध हैं और बहुत मशहूर हैं।

प्रारंभ में आपने इसकी चार जिल्दें लिखीं। इन पुस्तकों में आपने इस्लाम विरोधियों के दांत तोड़ने वाले जवाब दिए। यह पुस्तकें आपने 1880, 1882 और 1884 में लिखीं। आपने इनमें क़ुरआन-ए-करीम के अल्लाह का कलाम होने, उसकी बेजोड़ता, और हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे, सिद्दीक और अंतिम नबी होने के अपराजेय प्रमाण प्रस्तुत किए। और साथ ही यह भी कहा कि जो इन दलीलों को खारिज कर दे, उसके लिए मैं इनाम के रूप में दस हज़ार रुपए दूंगा। (माख़ूज़ अज़: बराहीने अहमदिया, रूहानी ख़ज़ायन, जल्द 1, पृष्ठ 24 से 28) जो उस समय एक बहुत बड़ी राशि थी।

जब आपने यह घोषणा की और इस तरह पुस्तकें प्रकाशित कीं, तो उस समय मुसलमानों को कुछ हौसला हुआ कि हां, इस्लाम एक मज़बूत धर्म है और अंतिम धर्म है और हमें किसी से डरने की कोई ज़रूरत नहीं। और उस समय लोगों ने और उस दौर के उलेमा ने भी आपकी बहुत प्रशंसा की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस्लाम की इस सेवा की वजह से कुछ लोगों ने आपसे यह भी कहा कि आप हमसे बैअत लें, लेकिन क्योंकि आपको अल्लाह तआला का हुक्म नहीं था, इसलिए आपने उस समय बैअत नहीं ली। और जब अल्लाह का आदेश हुआ तो आपने बैअत ली और इस तरह ईमानदारों की जमाअत का आरंभ हुआ। बाद में अल्लाह तआला ने यह भी आदेश दिया कि यह घोषणा भी कर दो कि तुम ही मसीह मौऊद और महदी मअहूद हो।

बैअत से पहले आपने दिसंबर 1888 में "तबलीग" के नाम से एक ऐलान प्रकाशित किया था। उसमें आपने कहा:

"मैं इस स्थान से एक और पैग़ाम अल्लाह की मख़लूक़ को आम तौर पर और अपने भाई मुसलमानों को ख़ास तौर पर पहुंचाता हूं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि जो लोग हक़ के तलबगार हैं, वे सच्चे ईमान, सच्ची इमानी पाकीज़गी और अल्लाह से प्रेम का रहस्य सीखने के लिए, और गंदी, निकम्मी और धोखेबाज़ ज़िंदगी को छोड़ने के लिए मुझसे बैअत करें। इसलिए जो लोग अपने अंदर कुछ भी शक्ति पाते हैं, उन्हें ज़रूर मेरी ओर आना चाहिए क्योंकि मैं उनका हमदर्द होऊंगा और उनके बोझ को हल्का करने की कोशिश करूंगा, और अल्लाह तआला मेरी दुआ और मेरी तवज्जोह में उनके लिए बरकत देगा, बशर्ते कि वे रब्बानी शर्तों पर चलने के लिए पूरे दिल से तैयार हों। यह रब्बानी हुक्म है जिसे आज मैंने पहुंचा दिया है। इस संबंध में अरबी इल्हाम है:

اِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا۔ اَلَّذِيْنَ
يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ۔ يَدُاللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ "।

(सब्ज़ इश्तिहार, रूहानी ख़ज़ायन, जल्द 2, पृष्ठ 470)

अर्थात्, जब तूने इस सेवा का इरादा कर लिया तो अल्लाह पर भरोसा कर और इस नौका को हमारी निगरानी और हमारी वह्यी के अनुसार बना। जो लोग तुझसे बैअत करेंगे, वे तुझसे नहीं बल्कि अल्लाह से बैअत करेंगे। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर होगा।

फिर अल्लाह तआला ने निशानियाँ भी दिखाईं जमीनी भी और आसमानी भी। जिनमें आसमानी निशान में एक निशान "कुसूफ़ व खसूफ़" (चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण) का निशान था, जिसके बारे में हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि यह मेरे महदी के आगमन की विशेष निशानी है, जो रमज़ान के महीने में निश्चित तारीखों पर प्रकट होगी।

(सुन्ननुद दार क़ुत्नी, किताबुल ईदैन, बाब सिफ़तुस सलात वल खसूफ़ वल कसूफ़, हदीस 1795, प्रकाशित: मौअस्ससातुर रिसालत, बेरूत)

और यह निशान 1894 में पूर्व में और 1895 में पश्चिम में प्रकट हुआ। और बहुत से शुभ स्वभाव वाले लोगों ने इस निशान को देखकर आपको स्वीकार किया।

ज़िमननयहाँ यह भी निवेदन है कि इस रमज़ान में भी चाँद और सूरज का ग्रहण हुआ है। चाँद का ग्रहण हो चुका है और सूरज का ग्रहण लगना है और वही तारीखें हैं, और आगे भी हो सकता है कि ऐसा होता रहे। लेकिन जो चाँद और सूरज का ग्रहण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में हुआ और आपके दावे के बाद हुआ, उसकी अपनी अहमियत है। आपने ख़ुदा तआला से एक फ़ुर्क़ान और निशान माँगा था और फिर अल्लाह तआला ने वह निशान दिखाया।

कुछ अहमदी इन दिनों में जो चाँद और सूरज का ग्रहण हो रहा है, उसे भी निशान बताते हैं। यह अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

बहरहाल, अगर इसे निशान समझना भी है तो यह उसी का एक सिलसिला है जो अब जारी है, जिसका दावा एक सौ पैंतीस या छत्तीस साल पहले हो चुका है। लेकिन यह बात स्पष्ट कर दूँ कि आपके ज़माने का ग्रहण पूरब और पश्चिम दोनों जगह लगा था, और इस साल जो ग्रहण लगा है वह ज़्यादातर पश्चिम में लगा है। इसलिए हम इस ज़माने के ग्रहण को उस समय के ग्रहण के बराबर अहमियत नहीं दे सकते। और यह ग्रहण भी थोड़े से हिस्से में ही लग रहा है, यानी सूरज का केवल पच्चीस-तीस फ़ीसदी हिस्सा ढका जाएगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में तो यह ग्रहण पचहत्तर से सौ फ़ीसदी तक हुआ था। बल्कि जब यह शुरू हुआ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब दिखाया गया, तो आपने फ़रमाया कि हमने तो देख लिया है, लेकिन विरोधी इसे देखकर कोई असर नहीं लेंगे। फिर धीरे-धीरे वह बढ़ना शुरू हुआ और सूरज का ग्रहण लग गया। बहरहाल, मैंने यह बात संक्षेप में ज़िक्र कर दी है।

आपने 12 जनवरी 1889 को 'तक़मील-ए-तबलीग़' के नाम से एक ऐलान प्रकाशित किया और उसमें दस शर्तें रखीं, जैसा कि हम जानते हैं कि जमात-ए-अहमदिया में दस शर्तें बयअत की होती हैं। एक अहमदी होने के लिए इन पर अमल करना और इन्हें दिल से स्वीकार करना ज़रूरी है। आपने इसमें यह हिदायत फ़रमाई कि बयअत करने वाला यह अहद करे कि मैं जीवनभर शिर्क से बचा रहूँगा। झूठ, ज़िना, बुरी नज़रों से देखना, फ़िस्को-फ़ुजूर, ज़ुल्म, ख़यानत, फ़साद और बग़ावत के सभी तरीक़ों से बचता रहूँगा। नफ़्सानी जोश के वक़्त उन पर ग़ालिब नहीं होऊँगा, चाहे जो भी भावना पेश आए। फिर यह भी आपने फ़रमाया कि मैं नमाज़ों की तरफ़ पूरी तवज्जो दूँगा और अल्लाह और रसूल के हुक्मों के मुताबिक़ उन्हें सजाकर पढ़ने की भरपूर कोशिश करूँगा। ताहज्जुद की नमाज़ पढ़ने की कोशिश करूँगा। गुनाहों की माफ़ी माँगूँगा, इस्तिग़फ़ार करूँगा। ऐसा कोई जोश नहीं दिखाऊँगा जिससे किसी इंसान को नाजायज़ तकलीफ़ पहुँचे, न ज़बान से, न हाथ से। हर हाल में मैं ख़ुदा की वफ़ादारी रखूँगा और जो अल्लाह तआला की रज़ा होगी, उस पर राज़ी रहूँगा।

फिर यह भी कि मैं क़ुरआन-ए-करीम की हुकूमत को अपने ऊपर लागू करूँगा, यानी कुरआन के हर हुक्म पर अमल करने की कोशिश करूँगा और उन्हें खोजकर उन पर अमल करूँगा और जिन चीज़ों से अल्लाह तआला ने रोका है, उनसे रुकूँगा। और यह मेरा दस्तूर-ए-अमल होगा कि अल्लाह और उसके रसूल की बातों पर अमल करूँ। फिर मैं आजिज़ी, फ़रोतनी, मस्कीनी, और हलीमी को अपनाऊँगा और तकब्बुर व घमंड से बचूँगा। और दीन की इज़्ज़त और हमदर्दी को अपने माल, जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ रखूँगा। इंसानियत को हमेशा फ़ायदा पहुँचाने की कोशिश करूँगा, जितनी मेरी सलाहियतें और ताक़त है। फिर यह भी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो बयअत का इकरार किया है, उस पर मैं आख़िरी दम तक क़ायम रहूँगा और आपकी हर मआरूफ़ बात की पैरवी करूँगा, यानी जो भी शरीअत के मुताबिक़ आप हुक्म देंगे, और शरीअत के ख़िलाफ़ तो आप हुक्म दे ही नहीं सकते, उनकी हमेशा पाबंदी करूँगा, क्योंकि आप तो आए ही सैय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के दीन को फैलाने के लिए थे। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ऐसा ताल्लुक रखूँगा जो किसी दुनियावी रिश्ते में नहीं पाया जाता।

यह इन शर्तों का ख़ुलासा है जो अभी मैंने बयान किया है। और इन्हीं शर्तों पर बहुत सारे मुख़लिसीन ने बयअत की और आज तक हम उन्हीं शर्तों पर बयअत कर रहे हैं। और जो कुछ मैंने बयान किया, हमें इस पर सोचना चाहिए कि क्या हम वाक़ई इन तमाम बातों पर अमल कर रहे हैं?

यह एक याददिहानी है। यही वजह है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत-ए-अहमदिया में मुख़लिसीन की एक बहुत बड़ी तादाद है जो इस पर अमल भी करती है और फिर जान, माल, वक़्त और इज़्ज़त को क़ुर्बान करने के लिए हर वक़्त तैयार रहती है। और इस बात पर तैयार रहती है कि हम दीन की अज़मत को क़ायम करें और इस्लाम का पैग़ाम दुनिया तक पहुँचाने की भरपूर कोशिश करें। और जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें फ़रमाया, उसी तरह हम तबलीग़-ए-इस्लाम को अंजाम देने की कोशिश करें। और सैय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो

अलैहि व सल्लम) के इश्क़ को अपनी इंतिहा तक पहुँचाएँ। और सैय्यदना के इश्क़ की जो हालत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिल में थी, उसका नक़्शा आपके एक़ इक्तिबास में यूँ मिलता है। आपने फ़रमाया:

"मैं हमेशा तअज्जुब की निगाह से देखता हूँ कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है" (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) "(हज़ार-हज़ार दुरूद और सलाम उस पर) यह किस आली मरतबा का नबी है। इसके आला मक़ाम की कोई इंतिहा मालूम नहीं हो सकती। और इसकी तासीर-ए-क़ुद्सी का अंदाज़ा करना इंसान का काम नहीं। अफ़सोस कि जैसा हक़ शिनाख़्त का है, उसके मरतबे को शिनाख़्त नहीं किया गया। वह तौहीद जो दुनिया से ग़ायब हो गई थी, वही एक पहलवान है जो उसे दोबारा दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से इंतिहाई दर्जे की मोहब्बत की और इंतिहाई दर्जे में इंसानियत की हमदर्दी में उसकी जान ग़ुदाज़ हुई। इसलिए ख़ुदा, जो उसके दिल के राज़ का वाक़िफ़ था, उसने उसे तमाम अंबिया और तमाम अव्वलीन व आख़िरीन पर फ़ज़ीलत बख़्शी। और उसकी मुरादें उसकी ज़िंदगी में ही उसे अता कीं। वही है जो हर फ़ैज़ का सरचश्मा है। और वह शख़्स जो उसके इफ़ाज़े के इक़रार के बग़ैर किसी फ़ज़ीलत का दावा करता है..." यानी (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के इफ़ाज़े के बिना किसी भी नेकी का दावा करता है, "...वह इंसान नहीं है बल्कि ज़ुर्रियत-ए-शैतान है, क्योंकि हर फ़ज़ीलत की कुंजी इसी को दी गई है।"

(*Haqiqat-ul-Wahi*, *Ruhani Khazain*, Volume 22, Pages 118-119)

और इस प्रकार आपने अनेक स्थानों पर पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाम के बारे में बयान फ़रमाया है। इसी तरह एक स्थान पर आपने फ़रमाया: "वह इंसान जिसने अपनी ज़ात से, अपनी सिफ़ात से, अपने अफ़आल से, अपने आमाल से और अपनी रूहानी और पाक शक्तियों के ज़ोरदार दरिया से पूर्णता का संपूर्ण नमूना इल्म, अमल, सच्चाई और स्थायित्व के साथ पेश किया और 'इंसान-ए-कामिल' कहलाया... वह इंसान जो सबसे ज़्यादा मुकम्मल और इंसान-ए-कामिल था, और मुकम्मल नबी था और मुकम्मल बरकतों के साथ आया, जिसकी वजह से रूहानी पुनर्जागरण और पुनरुत्थान की शुरुआत हुई और एक मरा हुआ जहान उसके आने से ज़िंदा हो गया, वह मुबारक नबी, हज़रत ख़ातमुल-अंबिया, इमामुल-असफ़िया, ख़ातमुल-मुर्सलीन, फ़ख़्र-उल-अनबिया जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। ऐ प्यारे ख़ुदा! उस प्यारे नबी पर ऐसी रहमत और दुरूद भेज जो दुनिया की शुरुआत से तूने किसी पर न भेजी हो।"

(इतमामुल-हुज्जा, रूहानी ख़ज़ाइन, जल्द 8, सफ़ा 308)

तो ये वो बातें थीं, ये वो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इश्क़ था जिसकी वजह से अल्लाह तआला ने फिर आपको इस काम के लिए मअबूस फ़रमाया कि इस्लाम की दूसरी नशअत के लिए अब आप ही हैं जो अपना किरदार अदा करेंगे, और अल्लाह तआला ने आपको फ़रमाया कि अब इस इश्क़ और मोहब्बत की वजह से मैं तुम्हें ये मुक़ाम देता हूँ कि तुम मसीह मौऊद और महदी मौऊद हो। और इसका ऐलान कर दो। और इस आख़िरी ज़माने में इस्लाम की दूसरी नशअत का जो वादा था, उसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं पूरा करता हूँ और तुम्हारे सुपुर्द ये काम करता हूँ।

तो ये वो काम थे जिनके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मअबूस हुए और आपने फिर उनका हक़ भी ख़ूब अदा किया। आपने जमाअत को नसीहत की और फ़रमाया कि जब तुमने मेरी बैअत कर ली है तो फिर ये भी याद रखो कि अल्लाह तआला ने तो ये फ़रमाया है कि मसीह मौऊद के साथ सहाबा जैसे लोग होंगे। तो जब ये अल्लाह तआला का फ़रमान है, तो फिर जो मेरी बैअत में आए हैं, जिन्होंने ये अहद किया है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम रौशन करेंगे और इस्लाम का नाम रौशन करेंगे और इस्लाम की तब्लीग़ को दुनिया के किनारों तक पहुँचाएंगे, तो फिर उन्हें सहाबा का वह रंग भी इख़्तियार करना होगा।

आप इसकी तफ़सील में एक जगह फ़रमाते हैं: "हमारे हादी-ए-अक्मल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा ने अपने ख़ुदा और रसूल के लिए कैसी-कैसी जानिसारियाँ कीं। जला वतन हुए, ज़ुल्म उठाए, तरह-तरह के मुसीबतें बर्दाश्त कीं, जानें दीं, लेकिन सदक़ व वफ़ा के साथ क़दम बढ़ाते गए। तो वह क्या चीज़ थी जिसने उन्हें ऐसा जानिसार बना दिया? वह सच्ची इलाही मोहब्बत का जोश था जिसकी शुआ उनके दिल में पड़ चुकी थी, इसलिए चाहे किसी भी नबी से मुक़ाबला कर लिया जाए, आपकी तालीम, तज़किया-ए-नफ़्स, अपने पैरवकारों को दुनिया से मुतनफ़्फ़िर कर देना, शुजाअत के साथ सिदक़ के लिए ख़ून बहा देना इसकी मिसाल कहीं न मिल सकेगी।"

यह ऐसा वफ़ा का एक जज़्बा था जो उन्होंने दिखाया कि हमें उसकी मिसाल कहीं नहीं मिलती। आप फ़रमाते हैं: "यह मुक़ाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा का है और उनमें जो आपसी उल्फ़त और मोहब्बत थी, उसका नक़्शा" क़ुरआन करीम ने "दो फ़िकरों में बयान फ़रमाया है:

وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ (अल-अंफ़ाल :64)

"यानि जो तालीफ़ उनमें है वह हरगिज़ पैदा न होती, चाहे ज़मीन की सारी दौलत भी खर्च कर दी जाती।" यह मोहब्बत और प्यार जो अल्लाह तआला ने उनमें पैदा किया, अगर तुम बेशुमार माल भी खर्च कर देते, तो वह मोहब्बत और प्यार पैदा न कर सकते। तो यह अल्लाह तआला का पैदा किया हुआ मोहब्बत और प्यार है, इसलिए कि उनमें इख़्लास था, वफ़ा थी और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इस्लाम की ख़ातिर अपनी जानें निसार करने पर तैयार थे।

आप फ़रमाते हैं: "अब एक और जमाअत मसीह मौऊद की है जिसने अपने अंदर सहाबा का रंग पैदा करना है।" तो यह नमूना आपने हमारे सामने क़ायम फ़रमाया और इस नमूने पर चलते हुए अगर मसीह मौऊद की बैअत की है, तो फिर मसीह मौऊद तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मिशन को पूरा करने के लिए आए थे, इसलिए आपने फ़रमाया कि यह जमाअत जो है, इसने सहाबा का रंग पैदा करना है। "सहाबा की तो वह पाक जमाअत थी जिसकी तारीफ़ में क़ुरआन शरीफ़ भरा पड़ा है।" आप फ़रमाते हैं: "क्या आप लोग ऐसे हैं?" पूछ रहे हैं हमसे। क्या हम ऐसे हैं? फ़रमाया: "जब ख़ुदा कहता है कि हज़रत मसीह के साथ वह लोग होंगे जो सहाबा के कंधे से कंधा मिलाए हुए होंगे। सहाबा तो वह थे जिन्होंने अपना माल, अपना वतन राह-ए-हक़ में दे दिया और सब कुछ छोड़ दिया।" फ़रमाते हैं: "हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का मामला अक्सर सुना होगा, एक दफ़ा जब राह-ए-ख़ुदा में माल देने का हुक्म हुआ तो घर का सारा असबाब ले आए। जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दरयाफ़्त किया कि घर में क्या छोड़ आए, तो फ़रमाया कि ख़ुदा और रसूल को घर में छोड़ आया हूँ।"

तो यह वह जज़्बा था जो उन लोगों ने दिखाया। जिसकी एक मिसाल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़िंदगी में मिलती है।

आप फ़रमाते हैं: "...यह समझ लो कि वह लोग तो ख़ुदा की राह में शहीद हो गए। उनके लिए तो यही लिखा है," चाहे अमली तौर पर शहीद हुए या नहीं, ख़ून बहाया या नहीं, लेकिन जो क़ुर्बानियाँ हैं, वही शहादत का रुतबा देने वाली हैं। यही लिखा है: "कि तलवारों के नीचे जन्नत है" वह हर वक़्त तलवारों के नीचे जाने के लिए तैयार थे। "लेकिन हमारे लिए तो इतनी सख़्ती नहीं क्योंकि **يَضَعُ الْحَرْبَ** हमारे लिए आया है" यानी महदी के वक़्त लड़ाई नहीं होगी।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 42-43, एडीशन 1984)

इसलिए हमारे लिए जो थोड़ा बहुत क़ुर्बानी का अवसर अल्लाह तआला ने प्रदान किया है, उसका हमें लाभ उठाना चाहिए और अपनी जान, माल और समय को क़ुर्बान करने के जो हमने वचन दिए हैं, उन्हें पूरा करना चाहिए। और बैअत के वचन में जो हमने यह कहा है कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सबसे अधिक मोहब्बत करूँगा, क्योंकि वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रतिनिधि हैं, तो फिर हमें इस पर अमल करके दिखाना भी होगा।

फिर आपने जमाअत को बहुत-सी नसीहतें फ़रमाईं। फ़रमाया कि अगर तुमने मेरी बैअत की है तो फिर बैअत का हक अदा करने के लिए मुझे यह चाहिए। अगर बैअत का हक अदा करना है तो फिर मुझे यह चाहिए। क्या चाहिए? फ़रमाया: क़ुरआन करीम पढ़ो, लेकिन कहानी के तौर पर नहीं।

(माख़ूज़ अज़ *मलफ़ूज़ात*, जल्द 3, सफ़ा 155, एडीशन 1984)

अगर बैअत का हक अदा करना है तो फिर पहली शर्त यही है कि क़ुरआन करीम पढ़ो, लेकिन कहानी की तरह नहीं, अफ़सानों की तरह नहीं। उसे समझ कर पढ़ो। पिछले ख़ुत्बे में मैंने क़ुरआन करीम की तिलावत की तरफ़ ध्यान दिलाया था। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बयानात और इर्शादात भी बयान किए थे। उनके विवरण में एक स्थान पर लोगों की हालत बयान करते हुए आपने फ़रमाया कि देखो लोग कैसी क़ुरआन ख़्वानी करते हैं खुश-लहज़गी से और उत्तम तिलावत के साथ पर वह उनकी गर्दन से नीचे नहीं उतरती। तिलावत तो बहुत अच्छी है लेकिन जो बात समझने की है वह उन्हें नहीं आती। पढ़ लिया, बहुत अच्छा किया, लेकिन अर्थ नहीं पता। मतलब नहीं जानते। हाँ, गले से आवाज़ें ज़रूर अच्छी निकाल

लेते हैं।

इसलिए फ़रमाया कि क़ुरआन करीम, जिसका दूसरा नाम *ज़िक्र* है, वह प्रारंभिक युग में इंसान के अंदर छुपी हुई और भुला दी गई सच्चाइयों और अंतर्निहित गुणों को याद दिलाने के लिए आया है। हर युग में सच्चाइयों को याद दिलाने के लिए क़ुरआन शरीफ़ आता है। इस युग में भी, और आने वाले हर युग में भी। अल्लाह तआला के इस सच्चे वादे के अनुसार इस युग में भी आसमान से एक शिक्षक आया है, क्योंकि "إِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ"|"हम इसे अवश्य संरक्षित रखेंगे—का वादा है। और जो *"آخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ"* (जिनका उल्लेख बाद में जुड़ने वालों के रूप में है)—का वास्तविक और वादा किया गया प्रतिबिंब है, वह वही है जो तुम्हारे बीच बोल रहा है।

फिर आपने फ़रमाया कि मैं एक बार फिर हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी की ओर लौट कर कहता हूँ कि आपने इसी युग के बारे में ख़बर दी थी कि लोग क़ुरआन को पढ़ेंगे, लेकिन वह उनके हलक से नीचे नहीं उतरेगा। अब हमारे विरोधी... फ़रमाया कि सिर्फ़ हमारे विरोधी नहीं, बल्कि वे लोग जो अल्लाह तआला के वादों की क़द्र नहीं करते, वे लोग जो अल्लाह तआला के वादों का ही इनकार कर रहे हैं, और हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बातों पर ध्यान नहीं देते ये लोग दावे तो करते हैं कि हमें क़ुरआन आता है, लेकिन अमल नहीं है।

फ़रमाया कि अफ़सोस की बात यह है कि अगर कोई नसीहत करने वाला, कोई प्रेम करने वाला व्यक्ति समझाना चाहे, तो वे समझने की कोशिश नहीं करते। अगर कोई उपदेश देने वाला, उनका भला चाहने वाला उन्हें समझाना चाहे, तो वे समझने की कोशिश नहीं करते। आपने फ़रमाया कि बेशक, अगर वे कोशिश नहीं करना चाहते तो न करें, लेकिन इतना तो करें कि उसकी बात ही ज़रा सुन लें। बिना वजह ही विरोध न करते चले जाएँ।

आपने फ़रमाया, लेकिन क्यों सुनें? यह तो उनकी मजबूरी है कि वे सुन भी नहीं सकते क्योंकि उनके पास *गुश-ए-शुनवा* (सुनने वाला कान) नहीं है। सुनने की शक्ति होनी चाहिए, तभी कोई सुन सकता है। सब्र और हुस्न-ए-ज़न से काम लें। अल्लाह तआला तो यही फ़रमाता है कि सब्र और अच्छा गुमान रखो, लेकिन वे तो ऐसा करना ही नहीं चाहते। ये तो सिर्फ़ विरोध करना चाहते हैं।

फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला फ़ज़्ल और रहमत के साथ ज़मीन की तरफ़ ध्यान न करता, तो इस युग में इस्लाम भी दूसरे मज़हबों की तरह मृत हो जाता और सिर्फ़ एक कहानी बन कर रह जाता। फ़रमाया कि कोई भी मृत मज़हब किसी और को जीवन नहीं दे सकता। लेकिन इस्लाम आज भी जीवन देने के लिए तैयार है।

लेकिन चूंकि यह *सुननतुल्लाह* (अल्लाह का नियम) है कि अल्लाह तआला कोई काम बिना ज़रिया के नहीं करता हाँ, यह अलग बात है कि वह ज़रिया हमें नज़र आए या न आए। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि ज़रिए ज़रूर होते हैं। उसी तरह, आसमान से जो नूर (प्रकाश) उतरता है, वह ज़मीन पर पहुँचकर ज़रियों की शक्ल अख़्तियार कर लेता है।

अल्लाह तआला आसमान से जो प्रकाश भेजता है, वह विभिन्न रूपों में ज़रिए बन जाता है, उस कार्य के लिए माध्यम बनता है। फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने देखा कि हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में दुनिया अंधकार और गुमराही में डूबी हुई है, और हर तरफ़ से गुमराही और अंधकार की गहरी घटाएँ छाई हुई हैं, तो उस समय उस अंधकार को दूर करने के लिए और गुमराही को हिदायत और सआदत में बदलने के लिए एक *सिराज-मुनीर*एक रौशन दीपक*फ़ारान* की चोटियों पर चमका, यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नबी बनाकर भेजा गया।

तो फ़रमाया कि मैं इस ज़माने में इसलिए आया हूँ कि वह नूर जो चमका था, वह एक युग के गुज़रने के बाद और उलमा के अमल, लोगों के व्यवहार और मुसलमानों की ग़फ़लत की वजह से धुंधला कर दिया गया है। वह कभी बुझा नहीं, लेकिन नज़रों से ओझल ज़रूर हो गया है। अल्लाह तआला ने मुझे इसलिए भेजा है कि दुनिया को बताऊँ कि यह नूर तो अभी भी चमक रहा है, देखो इसे कैसे देखना है—मेरी आँख से देखो। अल्लाह तआला ने मुझे इसका ज़रिया बनाया है।

आपने फ़रमाया: "और मैं अल्लाह तआला की तरफ़ से हूँ। चाहे तो मुझे क़बूल करो, चाहे न करो। यह तुम्हारी मर्ज़ी है। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि मैं अल्लाह तआला की तरफ़ से हूँ और मुझे इस पर पूरा यक़ीन है। और मेरे मानने वालों को भी इस पर पूरा यक़ीन है। मुझे अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गुलामी में इस ज़माने में भेजा है।"

(*माख़ूज़ अज़ मलफ़ूज़ात*, जिल्द 1, सफ़ा 97-98, एडीशन 1984)

आप ने फ़रमाया कि इस्लाम की मुख़ालफ़त के दौर में "ख़ुदा तआला की तरफ़ से जो सिलसिला क़ायम किया जाएगा वो मसीह मौऊद ही का सिलसिला होगा।" उनके तोड़ के लिए और इस्लाम की पुनर्जागरण के लिए जो सिलसिला क़ायम किया जाएगा वो मसीह मौऊद का सिलसिला होगा "और इसी लिए अहादीस में मसीह मौऊद का नाम ख़ुदा तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मार्फ़त 'कासिर-ए-सलीब' रखा है क्योंकि ये सच्ची बात है कि हर एक सुधारक वर्तमान फ़िन्नों की इस्लाह के लिए आता है। अब इस वक़्त अगर ख़ुदा के लिए सोचो तो क्या मालूम न होगा कि सलीबी नजात की ताईद में क़लम और ज़बान से वो काम लिया गया है कि अगर साफीहात-ए-आलम को टटोला जाए तो बातिल परस्ती की ताईद में ये सरगर्मी और ज़माने में साबित न होगी।" किसी और ज़माने में ये साबित नहीं होती। "और जबकि सलीबी फ़िन्ने के हामियों की तहरीरें अपने इंतिहाई नुक्ते पर पहुंच चुकी हैं।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द अव्वल, सफ़ा 205-206, एडिशन 1984)

हर तरफ़ ईसाइयत का ज़ोर है, उस ज़माने में तो बहुत ज़्यादा था। जैसा कि पहले भी ज़िक्र हुआ है, ईसाइयत की तबलीग़ दुनिया में हर जगह फैल रही थी और मुसलमान भी ईसाइयों की गोद में जा रहे थे। पहले कभी इतनी शिद्दत से इस तरह ये तबलीग़ नहीं हुई थी जैसी उस वक़्त हो रही थी। तो उसके रद्द के लिए मसीह मौऊद को ख़ुदा तआला ने भेजा।

आप फ़रमाते हैं कि "तौहीद-ए-हक़ीक़ी और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इफ़्फ़त, इज़्ज़त और हक़्क़ानियत और किताबुल्लाह के मं-इंदिल्लाह होने पर ज़ुल्म और ज़ोर के रास्ते से हमले किए गए हैं, तो क्या ख़ुदा तआला की ग़ैरत का तक़ाज़ा नहीं होना चाहिए कि वह 'कासिर-ए-सलीब' को नाज़िल करे?" अब गो तक़ाज़ा तो यही था कि इस ज़माने में जो हालत थी, अल्लाह के वादे के मुताबिक़ कासिर-ए-सलीब नाज़िल होना चाहिए था। इस ज़माने में, आज के ज़माने में, चाहे ईसाइयत का वो ज़ोर नहीं रहा, लेकिन ये हक़ीक़त है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त, इफ़्फ़त और हक़्क़ानियत पर हमले किए जा रहे हैं और क़ुरआन-ए-करीम पर भी हमले किए जाते हैं। आज भी हर जगह मुख़्तलिफ़ किस्म के लोग नाज़ीबा हरकतें करते हैं, दरिदा-दहनी करते हैं, चाहे वो दह्रीए हों, ला-मज़हब हों या इस्लाम के मुख़ालिफ़ हों, या किसी मज़हब से ताल्लुक़ रखने वाले हों सब इसमें शामिल हैं। और आज भी ये मसीह मौऊद की जमाअत ही का काम है कि इन लोगों का सर कुचले, उनको दलील के साथ जवाब दे और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त, इफ़्फ़त और हक़्क़ानियत को दुनिया पर ज़ाहिर करे और क़ुरआन-ए-करीम की हिफ़ाज़त का भरपूर किरदार अदा करे।

आप फ़रमाते हैं: "क्या ख़ुदा तआला अपने वादे *इन्ना नहु नज़्ज़ल्नाज़-ज़िक्र व इन्ना लहू ल-हाफ़िज़ून* को भूल गया? यक़ीनन याद रखो कि ख़ुदा के वादे सच्चे हैं।" अल्लाह ने वादा फ़रमाया कि मैंने क़ुरआन-ए-करीम उतारा और मैं इसकी हिफ़ाज़त करूँगा। अल्लाह तआला वादे का सच्चा है। "उसने अपने वादे के मवाफ़िक़ दुनिया में एक नज़ीर भेजा है। दुनिया ने उसको क़बूल न किया मगर ख़ुदा तआला उसको ज़रूर क़बूल करेगा और बड़े ज़ोरावर हमलों से उसकी सच्चाई को ज़ाहिर करेगा। मैं तुम्हें सच्च-सच्च कहता हूँ कि मैं ख़ुदा तआला के वादे के मवाफ़िक़ मसीह मौऊद होकर आया हूँ। चाहो तो क़बूल करो, चाहो तो रद्द करो, मगर तुम्हारे रद्द करने से कुछ न होगा। ख़ुदा तआला ने जो इरादा फ़रमाया है वो होकर रहेगा क्योंकि ख़ुदा तआला ने पहले से *ब्रहीन* में फ़रमा दिया है: *सदक़ल्लाहु व रसूलुहू व काना वअदन मफ़ऊला*।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 206, एडिशन 1984)

कि जो अल्लाह तआला और उसके रसूल ने कहा था वो सच्च कहा था और ये वादा पूरा होना ही था।

इसलिए ये लाज़मी बात है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई दुनिया में फैलेगी। फैलनी थी और फैलेगी क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गुलामी में, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन की इशाअत के लिए आए हैं, जो आख़िरी दीन है। उसको अल्लाह तआला ने बनाया है और उसे दुनिया में फैलना है चाहे अपने मुख़ालिफ़ करें या ग़ैर मुख़ालिफ़। उनकी मुख़ालिफ़त आख़िरकार नाकाम और नामुराद हो जाएगी।

आप फ़रमाते हैं कि "तुम कहते हो कि क्यों आया है?" बहुत सारे मुसलमान ऐतराज़ करते हैं। आप फ़रमाते हैं कि "तुम ख़ुद ही बताओ कि मुसलमानों के जो आमाल थे वो इसका तक़ाज़ा नहीं करते कि कोई मुसलेह होना चाहिए?" मौलवी बड़ा शोर मचाते हैं कि "क्यों आया?" अपने आमाल तो देखो। आमाल तुम्हारे ख़ुद ही

तक़ाज़ा कर रहे हैं। चुनांचे इसकी तफ़्सील में एक जगह आप ने फ़रमाया: "अगर मुसलमान कहे जाने वालों के आमाल, आमाल-ए-सालेहा हैं तो फिर इनके पाक नतायिज क्यों पैदा नहीं होते?" आप ने फ़रमाया कि "ये लोग समझते नहीं" और कहते हैं: "हम में कौन सी बात इस्लाम के ख़िलाफ़ है? हम ला इलाहा इलल्लाह कहते हैं और नमाज़ें भी पढ़ते हैं और रोज़े के दिनों में रोज़े भी रखते हैं और ज़कात भी देते हैं। मगर" आप ने फ़रमाया कि "मैं कहता हूँ कि इनके तमाम आमाल, आमाल-ए-सालेहा के रंग में नहीं हैं बल्कि महज़ एक पोस्ट की तरह हैं।" एक खोल है "जिनमें मग़ज़ नहीं है। वर्ना अगर ये आमाल सालेहा हैं तो फिर इनके पाक नतायिज क्यों पैदा नहीं होते?"

अल्लाह तआला का तो वादा है कि मैं सालेह आमाल के नतायिज पैदा करता हूँ तो ये क्यों नहीं हो रहा? क्या मुसलमानों की जो ना-क़ाबिले-बयान हालत है इस ज़माने में, ये ज़ाहिर नहीं करती, ये बताती नहीं कि कुछ न कुछ कमज़ोरियाँ हैं, कुछ न कुछ कमियाँ हैं, कोई न कोई ख़ामी है जिसकी वजह से अल्लाह तआला के वादे पूरे नहीं हो रहे? आप फ़रमाते हैं: "आमाल-ए-सालेहा तो तब हो सकते हैं कि वो हर क़िस्म के फ़साद और मिलावट से पाक हों। लेकिन इनमें ये बातें कहाँ हैं?"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 343, एडिशन 1984)

दावे तो ये किए जा रहे हैं कि हम नमाज़ें पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं लेकिन परहेज़गारी तो कोई नहीं है। अगर खुद ही अपना जायज़ा लें तो पता चल जाएगा कि ये बुराइयाँ उनमें मौजूद हैं।

फिर आपने फ़रमाया कि ज़माने के हालात किसी सुधारक की मांग करते हैं, और आजकल तो खुद उन्हीं की तरफ़ से यह नारा भी लगाया जा रहा है कि कोई सुधारक होना चाहिए। मुसलमानों की जो हालत है, उनकी इस्लाह के लिए किसी का आना ज़रूरी है, लेकिन जिसे अल्लाह ने भेजा है, उसे मानना नहीं चाहते। चुनांचे आपने एक जगह फ़रमाया कि यह ईसाई जिस तरह हमलों पर उतारू हैं, या ग़ैर-मज़ाहिब वाले या नास्तिक जो हमले कर रहे हैं, और मुसलमान खुद इन हमलों की ज़द में आकर अपने दीन से दूर हो रहे हैं, यह सब इस बात की पुकार हैं कि कोई मसीहा हो जो उन्हें सीधी राह दिखाए। और वह मसीहा अल्लाह ने इस ज़माने में मुझे बना कर भेजा है।

आपने फ़रमाया कि मुसलमानों को तो चाहिए था कि ऐसे हालात में अगर हमारे पास कोई दलील भी नहीं होती, तब भी वह दीवाने की तरह तलाश करते कि मसीह अब तक क्यों नहीं आया। कोई दलील भी अगर मैं न देता, तब भी उन्हें खुद हालात देखकर उसे तलाश करना चाहिए था। उन्हें यह नहीं करना चाहिए था कि अपने झगड़ों के लिए बुलाते, क्योंकि उसका काम तो "कसर-ए-सलीब" (ईसाइयत का खंडन) है। मसीह ने जब आना था तो ईसाइयत का रद्द करना था, नास्तिकों का रद्द करना था, और यही इस ज़माने की ज़रूरत है। उस वक़्त भी जब आपने दावा किया और आज भी वही ज़रूरत है। इसलिए आपने फ़रमाया कि आने वाले का नाम मसीह मौऊद रखा गया है।

अगर मुल्लाओं को मानवता की भलाई और बेहतरी मंज़ूर होती तो हरगिज़ ऐसा न करते जैसा वे हमारे साथ कर रहे हैं। उन्हें सोचना चाहिए था कि हमारे खिलाफ़ फतवे लिखकर क्या हासिल किया है? जिसे खुदा ने कहा हो कि हो जा, उसे कौन कह सकता है कि न हो। ये लोग जो हमारे मुखालिफ़ हैं, ये भी किसी न किसी अंदाज़ में हमारे नौकर ही हैं, क्योंकि हमारी बात को पूरब से पश्चिम तक पहुंचा देते हैं। यही मुखालफ़त भी हमारी ताबलीग़ (प्रचार) का बड़ा ज़रिया बन गई है।

(माखूज़ अज़ मफलूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 397-398, एडिशन 1984)

इसलिए चाहे ये लोग जितना भी ज़ोर लगा लें कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को खत्म करना है, लेकिन वही ज़ोर, उल्टा हमारे फैलाव का ज़रिया बन जाता है।

एक जगह आपने फ़रमाया कि "अल्लाह तआला मां की ममता से भी ज़्यादा मेहरबान है। वह नहीं चाहता कि उसकी मख़लूक़ (सृष्टि) बर्बाद हो। वह हिदायत और रोशनी की राहें तुम्हारे लिए खोलता है, लेकिन तुम्हें उन पर चलने के लिए अक़्ल और तज़किया-ए-नफ्स (आत्मिक शुद्धता) से काम लेना चाहिए। जैसे ज़मीन कि जब तक हल चलाकर तैयार नहीं की जाती, बीज उसमें नहीं जमता। उसी तरह जब तक मुजाहदा और रियाज़त से तज़किया-ए-नफ्स न हो, पाक अक़्ल आसमान से उतर नहीं सकती।

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा फज़्ल किया है और अपने दीन और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ताईद में ग़ैरत खाकर एक इंसान को, जो तुममें बोल रहा है, भेजा है ताकि वह इस रौशनी की तरफ़ लोगों को बुलाए। अगर ज़माने में ऐसा फसाद और फ़ितना न होता और दीन को मिटाने के लिए जिस क़िस्म की कोशिशें हो रही हैं वह न होतीं, तो कोई हर्ज नहीं था। लेकिन अब तुम खुद देख रहे हो कि हर तरफ़ दाएं-बाएं से तमाम क़ौमें इस्लाम को मिटाने की फ़िक्र में लगी हुई हैं।"

(मफलूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 72-73, एडिशन 1984)

और आजकल तो और भी ज़्यादा ज़ोर से लगी हुई हैं। अगर इस्लाम की मुखालफ़त न होती तो फिर मसीह मौऊद के आने की कोई ज़रूरत न थी, लेकिन हम देख रहे हैं कि आज से 136 साल पहले जब आपने दावा किया, उस वक़्त से लेकर आज तक इसमें इज़ाफ़ा ही होता चला जा रहा है।

आपने एक जगह फ़रमाया कि तुम लोग मुझे कहते हो यानी मुख़ालिफ़ीन कहते हैं कि यह दुकानदारी बनाई हुई है। मेरी कोई दुकानदारी नहीं है। मसीह मौऊद का काम तो दीन का फैलाना है और यह दीन का कारोबार है। हाँ, अगर कोई इसे कारोबार का नाम देना ही चाहता है, तो यह कारोबार दीन का कारोबार है। आपने फ़रमाया कि अगर तुम मुझसे हक़ीक़त पूछते हो तो समझ लो कि हम दुनियावी लिहाज़ से एक मुर्दे की तरह हैं। हमारी मिसाल दुनिया के कारोबार के नज़रिए से एक मुर्दे जैसी है। हम तो महज़ दीन के लिए हैं। हमारा सारा कारोबार दीन से जुड़ा है, जैसा कि इस्लाम में हमेशा बुज़ुर्गों और इमामों का होता रहा है। हमारा कोई नया तरीक़ा नहीं है, बल्कि लोगों को उन अकीदों से, जो हर तरह से उनके लिए ख़तरनाक हैं, दूर करना चाहते हैं। उन अकीदों को निकालना चाहते हैं जो गलत हैं। इसलिए हमारा असल मक़सद यही है क्योंकि कुछ ग़लत तरह की बिदअतें (अवांछनीय परंपराएँ) फैल गई हैं। कुछ ग़लत अकीदे इस्लाम में पैदा हो गए हैं। हम उन्हें दूर करना चाहते हैं और हक़ीकी दीन, जो क़ुरआन करीम की तालीम है, उसे प्रचलित करना है। और यही मेरा मक़सद है आने का। इसी तरह मैंने दूसरे मज़ाहिब जो झूठे हैं उनकी हक़ीक़त को खोलना है।

आपने फ़रमाया: "मैंने दूसरे झूठे मज़ाहिब की हक़ीक़त को भी खोलना है। यही मेरा मक़सद है। इस्लामी नूर को दिखाना मेरा मक़सद है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रुत्बे और मक़ाम को दुनिया में क़ायम करना मेरा मक़सद है।"

(माखूज़ अज़ मफलूज़ात जिल्द 5, सफ़ा 167, एडिशन 1984; मफलूज़ात जिल्द 1, सफ़ा 310, एडिशन 1984)

आपने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मक़ाम के बारे में एक जगह फ़रमाया कि "याद रखो कि किताब मजीद के भेजे जाने" यानी क़ुरआन करीम के भेजे जाने "और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बअसत (प्रेषण) से अल्लाह तआला ने यह चाहा कि दुनिया पर अज़ीम-उश्शान रहमत का नमूना दिखाया जाए।" हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बअसत से रहमत का अज़ीम नमूना पेश किया जाए। "जैसा कि फ़रमाया : وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعَٰلَمِينَ और इसी तरह क़ुरआन मजीद के भेजने का मक़सद बताया गया: هُدًى لِّلۡمُتَّقِينَ। ये ऐसे अज़ीम मक़सद हैं जिनकी कोई मिसाल नहीं मिल सकती।"

इसलिए आपने फ़रमाया "अल्लाह तआला ने चाहा है कि जैसे सभी क़मालात जो नबियों में बिखरे हुए थे, वो सब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वजूद में जमा कर दिए, उसी तरह जो सारी खूबियाँ और क़मालात किताबों में बिखरे थे, वो सब क़ुरआन शरीफ में जमा कर दिए गए। और जैसा कि सभी क़मालात जो तमाम उम्मतों में थे, वो इस उम्मत में जमा कर दिए गए। इसलिए अल्लाह तआला चाहता है कि हम इन क़मालात को पा लें और ये बात भी नहीं भूलनी चाहिए कि जैसे वह हमारे लिए यह क़मालात देना चाहता है, वैसे ही उसने हमें ताक़त भी दी है। अगर उसी तरह ताक़तें न दी जातीं, तो हम उन क़मालात को किसी भी हालत में प्राप्त नहीं कर सकते थे।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द अवल, पृष्ठ 340-341, संस्करण 1984)

"फिर जब अल्लाह तआला ने हमें ताक़त दी और तालीम दी और ये मकसद भी बयान कर दिया, तो अब हमारा काम है कि हम उन्हें पाने के लिए हर मुमकिन कोशिश करें और यही आपने फ़रमाया कि इस दुनिया में आने का मेरा मकसद यही है। इसलिए अल्लाह तआला ने मुझे अवतरित किया है। इसी के तहत आपने फ़रमाया कि तो इन बातों पर गौर करो और देखो कि हम किस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम और आपने जो शरीअत लायी है, उसे दुनिया में फैला सकते हैं, बजाय इसके कि मेरी मुखालफत की जाए। आपने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ामिल नबी हैं।"

"हमें अल्लाह तआला ने वह नबी दिया जो ख़ातमुल मु'मिनीन, ख़ातमुल आरेफ़ीन और ख़ातमुल नबिय्यीन हैं और इसी तरह वह किताब उस पर नाज़िल की जो जामेअल कुतुब और ख़ातमुल कुतुब है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो

ख़ातमुल नबिय्यीन हैं और आप पर नबी का सिलसिला ख़त्म हो गया, तो यह नबूव्वत इस तरह से ख़त्म नहीं हुई जैसे कोई गला घोंटकर ख़त्म कर दे। ऐसा ख़त्म करना फख्र की बात नहीं होता, बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नबूवत का ख़त्म होना का मतलब यह है कि सिफ़तिय तौर पर आप पर नबूव्वत के तमाम क़मालात ख़त्म हो गए। यानी वो सारे क़मालात जो आदम से लेकर मसिह इब्न मरियम तक नबियों को दिए गए थे, वो सब आप में जमा कर दिए गए और इस तरह से आप ख़ातमुल नबिय्यीन ठहरे और इसी तरह वह तमाम तालीमात, वसाया और मआरीफ जो अलग-अलग किताबों में चली आ रही थीं, वो क़ुरआन शरीफ पर आकर ख़त्म हो गए और क़ुरआन शरीफ ख़ातमुल कुतुब ठहरा।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द अवल, पृष्ठ 341-342, संस्करण 1984)

"फिर आप फरमाते हैं: 'यहाँ यह भी याद रखना चाहिए कि मुझ पर और मेरी जमाअत पर जो यह इल्ज़ाम लगाया जाता है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल नबिय्यीन नहीं मानते, यह हम पर एक बड़ी झूठ है। हम जिस क़ुव्वत यकीन, मआरिफ़ और बसीरत के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अंबिया मानते हैं, उसका लाखवाँ हिस्सा भी दूसरे लोग नहीं मानते और उनका ऐसा ज़रफ ही नहीं है। वो इस हकीकत और राज को जो ख़ातमुल अंबिया की ख़त्म नबूवत में है, समझते ही नहीं हैं। उन्होंने सिर्फ़ बाप-दादा से एक शब्द सुना है मगर उसकी हकीकत से अनजान हैं और नहीं जानते कि ख़त्म नबूवत क्या होता है और इस पर ईमान लाने का मफ़हूम क्या है। मगर हम बसीरत ताम से (जिसे अल्लाह तआला बेहतर जानता है) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अंबिया यकीन करते हैं और अल्लाह तआला ने हम पर ख़ातम-ए-नबूव्वत की हकीकत को ऐसे तरीके से खोला है कि इस इन्फ़ा को जो हमें इस ख़ास शरबत से पिलाया गया है, हम एक ख़ास लज़्जत महसूस करते हैं, जिसका अंदाज़ा कोई नहीं कर सकता, सिवा उन लोगों के जो इस चश्मे से सराब हो चुके हैं।'

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 341-342, संस्करण 1984)"

"तो यह है आपकी तालीम, यह है आपका मक़ाम और यह है आपका मकसद जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे और जिसकी खातिर आपने जमाअत का क़ियाम किया और जिसके लिए आपने जमाअत को हुक्म दिया कि तुम लोग क़ुर्बानियाँ करो और इस पैग़ाम को दुनिया में पहुँचाओ और हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन को सारी दुनिया में फैलाओ और इस वक्त तक चैन से न बैठो जब तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हुकूमत को दुनिया में क़ायम न कर लो। ख़ुदाए वाहेद की हुकूमत को दुनिया में क़ायम कर दो और यही मसीह मौऊद के आने का मक़सद था और यही इस दीन की अहमियत है। अगर हम इस दीन की अहमियत समझते हैं और अपने आप को बैत का हक़ अदा करने वाला समझते हैं तो फिर हमें भी इन बातों पर सोच विचार करना होगा और जब हम यह काम करेंगे तो हम उस मक़सद को पाने वाले होंगे जो हमारी ज़िन्दगी का मक़सद है और उस मक़सद के हसिल करने वाले होंगे जो हमारी बैत का मक़सद है और हम अल्लाह तआला की रज़ा और क़ुर्ब को हासिल करने वाले होंगे।"

"रमज़ान के दिनों में दुआओं के ज़रिए से भी और अपने इल्म को बढ़ाने के ज़रिए से भी, क़ुरआन करीम का इल्म सीखने के ज़रिए से भी और अमली तौर पर पैग़ाम पहुँचाने के ज़रिए से भी इस काम में हमें जुट जाना चाहिए ताकि हम जल्द से जल्द दुनिया में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा लहराने वाले बन सकें और दुनिया को ख़ुदाए वादित के हुज़ूर झुकाने वाले बन सकें। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फरमाए।"

अख़ीर में मैं पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ की गुज़ारिश करना चाहता हूँ। अल्लाह तआला उनके हालात में आसानी पैदा फरमाए। आजकल मुख़ालिफ़ीन पूरा ज़ोर लगा रहे हैं। हर तरह की तकलीफ़ें पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं। कभी मस्जिद के मिनारों के नाम पे, कभी मिहाबों के नाम पे, कभी नमाज़ पढ़ने की वजह से, जो भी बहाना हिला मिलता है उनका मक़सद यही है कि अहमदियों को नुक़सान पहुँचाया जाए। अल्लाह तआला उन सब की हिफ़ाज़त करे।

और मुस्लिम उम्मत के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें भी अक़्ल और समझ दे और उनके हालात बेहतर करे, उन पर रहम फरमाए।

फिलिस्तीनी मुसलमानों पर जो नया दौर शुरू हो गया है, अल्लाह तआला उन्हें भी इस जुल्म से महफ़ूज़ रखे। उन पर रहम फरमाए।"
(अल-फज़ल इंटरनेशनल, 11 अप्रैल 2025, पृष्ठ 2 से 8)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा
सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

अमेरिका के दूरदराज़ इलाकों से आने वाले जमाअत के अज़ीज़ अहबाब ने अपने प्यारे इमाम से मुलाक़ात के बाद अपने जज़्बाती तास्सुरात पेश किए।

हज़ूर-ए-अनवर के चेहरे पर नज़र पड़ते ही इंसान को एक सुकून और सरूर महसूस होता है। मुबारक चेहरा मैंने देखा तो उसमें सिर्फ़ और सिर्फ़ नूर ही नूर दिखाई दिया।

मैं नया अहमदी हूँ और पहली बार हज़ूर से मिला हूँ। इस वक़्त मेरा दिल इस क़दर जज़्बात से भरा हुआ है कि आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते। पहले मैं शिया बन गया था लेकिन वहाँ मुझे कोई सुकून नहीं मिला और दिल मुतमइन नहीं हुआ। फिर अहमदियों के बीच आना-जाना शुरू किया और दिल को इत्मीनान मिला। आज हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात करके मैं खुले तौर पर इस बात का इज़हार करता हूँ कि यही सही रास्ता है और यही हक़ है।

मैंने मलेशिया में जो मुश्किल और सख़्त हालात में पाँच साल गुज़ारे हैं, उन्हें वर्णन करना मेरे लिए मुमकिन नहीं, लेकिन आज हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात ने वो सारी तकलीफ़ें और मुश्किलात दूर कर दी हैं और मुझे दिली सुकून मिला है। आज मैं बेहद ख़ुश हूँ।

ख़ुत्बा जुमा, नेशनल मज्लिस-ए-आमिला ख़ुद्दामुल् अहमदिया और नेशनल मजलिस-ए-आमिला अंसारुल्लाह अमेरिका की हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह छह बजकर पंद्रह मिनट पर "मस्जिद बैतुर्रहमान" में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अपने निवास स्थान पर वापस तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तर की डाक का मुआइना फ़रमाया और विभिन्न दफ़्तरी मामलों की अदायगी में मशग़ूल रहे। आज जुमा मुबारक का दिन था। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इमामत में नमाज़-ए-जुमा की अदायगी के लिए मेरीलैंड की स्थानीय जमाअत के अलावा अमेरिका भर की जमाअतों से अज़हाब और उनके परिवार बहुत लंबे और कठिन सफ़र तय करके पहुंचे थे।

मायामी से आने वाले अज़हाब ने 1078 मील, टुल्सा से आने वाले 1220 मील, डैलस से आने वाले 1342 मील जबकि ह्यूस्टन से आने वाले अज़हाब ने 1422 मील का सफ़र तय किया था। टक्सन की जमाअत से आने वाले अज़हाब 2280 मील और लॉस एंजेलिस से आने वाले अज़हाब और उनके परिवार 2653 मील, सिएटल से आने वाले 2731 मील, जबकि सैक्रामेंटो से आने वाले 2751 मील और सैन होजे से आने वाले 2843 मील के लंबे और कठिन सफ़र तय करके अपने प्यारे आक़ा की इमामत में नमाज़-ए-जुमा अदा करने पहुंचे थे।

इसके अलावा पड़ोसी मुल्कों मेक्सिको और पुएर्टो रिको से आने वाले अज़हाब ने भी अपने आक़ा की इमामत में नमाज़-ए-जुमा अदा करने की सौभाग्य प्राप्त किया। कनाडा से भी एक बड़ी तादाद में नमाज़-ए-जुमा के लिए मस्जिद बैतुर्रहमान पहुंची थी।

नमाज़-ए-जुमा में हजारों लोगों ने शिरकत की।

ख़ुतबा-ए-जुमा

तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार एक बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाए और ख़ुतबा-ए-जुमा इरशाद फ़रमाया। (हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस ख़ुतबा-ए-जुमा का पूरा पाठ देखने के लिए देखें: अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, अंक: 04 नवंबर 2022)

मस्जिद बैतुर्रहमान, मेरीलैंड में ख़ुतबा-ए-जुमा के दृश्य

हुज़ूर-ए-अनवर का यह ख़ुतबा-ए-जुमा MTA इंटरनेशनल के माध्यम से दुनिया भर में लाइव प्रसारित किया गया। यह ख़ुतबा दो बजे तक जारी रहा। बाद में हुज़ूर-ए-अनवर ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र को मिलाकर अदा कराया।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

नेशनल आमिला खुद्दामुल अहमदिया अमेरिका की मुलाकात

तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार शाम छह बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए, जहां नेशनल मजलिस-ए-आमिला ख़ुद्दामुल अहमदिया अमेरिका की हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। (विस्तृत रिपोर्ट यहां देखें) यह मीटिंग छह बजकर 55 मिनट पर समाप्त हुई।

नेशनल आमिला अंसारुल्लाह अमेरिका की मुलाकात

इसके बाद सात बजे नेशनल मजलिस-ए-आमिला अंसारुल्लाह अमेरिका की हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ के साथ इस मीटिंग का आगाज़ फ़रमाया। (विस्तृत रिपोर्ट यहां देखें) मीटिंग के अंत में मजलिस-ए-आमिला अंसारुल्लाह के सदस्यों को हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मीटिंग रात आठ बजे समाप्त हुई।

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर तशरीफ़ ले आए। रात साढ़े आठ बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुर्रहमान में नमाज़-ए-मग़रिब व ईशा अदा कराई। नमाज़ों के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

अमेरिका के दौरे का बीसवाँ दिन

15 अक्टूबर 2022, शनिवार

परिवारों से मुलाक़ातें, निकाहों की घोषणाएँ, हुज़ूर अनवर के साथ जमाअत ए अहमदिया अमेरिका के मुबल्लीग़ीन की मीटिंग, नॅशनल मजलिस आमिला जमाअत अहमदिया अमेरिका की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग, ह्यूमैनिटी फर्स्ट की इंतेज़ामी कमेटी की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 15 मिनट पर "मस्जिद बैतुर्रहमान" में तशरीफ़ लाकर नमाज़े फ़ज्र अदा करवाई। नमाज़ के बाद हज़ूर अनवर अपनी रहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हज़ूर अनवर ने दुनिया के मुख़्तलिफ़ ममालिक से फैक्स और ईमेल के ज़रिए आने वाले ख़ुतूत और रिपोर्ट्स का जायज़ा लिया और हिदायतें अता कीं। इसके अलावा मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी कामों में मसरूफ़ियत रही।

परिवारों से मुलाक़ातें

प्रोग्राम के मुताबिक़ सुबह 11 बजे हज़ूर अनवर अपने दफ़्तर में तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ की मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सेशन में 37 परिवारों के 162 अफ़राद को अपने प्यारे आका से मुलाक़ात का सौभाग्य मिला। हज़ूर अनवर ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट अता की।

आज मुलाक़ात करने वाले ये परिवार मेरीलैंड की स्थानीय जमाअत के अलावा अमेरिका की मुख़्तलिफ़ 25 जमाअतों से आए थे, जिनमें से कई ने बहुत लंबा सफ़र तय किया था। जमाअत Albany से आने वालों ने 353 मील, Charlotte से 422 मील और Boston से आने वालों ने 427 मील का सफ़र तय किया।

जमाअत अहमदिया के सदस्यों की प्रतिक्रियाएँ

आज मुलाक़ात करने वालों में कई ऐसे लोग और परिवार थे जिनकी यह पहली बार हज़ूर से मुलाक़ात थी।

एक दोस्त, सहराब अहमद साहिब ने बताया: "मेरी ज़िंदगी की यह पहली मुलाक़ात थी। मेरा दिल सुकून और मोहब्बत से भर गया है। ये चंद लम्हे जो मैंने ख़लीफ़तुल मसीह के साथ बिताए, मेरे लिए नायाब यादें बन गए हैं। मैं इन्हें कभी नहीं भूल सकता।"

शमीर गोहर मलिक साहिब, जो सेंट्रल जर्सी से आए थे, बोले: "बचपन में मैंने हज़ूर को देखा था जब मैं बहुत छोटा था। आज एक बालिग़ की हैसियत से पहली बार मिल रहा हूँ। इस वक़्त मेरे जज़्बात ऐसे हैं कि मैं एक अजीब सुकून और लज़्ज़त महसूस कर रहा हूँ। यह मुलाक़ात एक अज़ीम ने'मत है। हर किसी को हज़ूर से मिलने का मौक़ा नहीं मिलता। हम बहुत ख़ुशनसीब हैं।"

अली उमर साहिब, जो क्लीवलैंड से आए थे, बोले: "मेरे जज़्बात बयान से बाहर हैं। हम बहुत ही ख़ुशनसीब हैं। हज़ूर ने हमें बहुत मोहब्बत दी। हमें और हमारे बच्चों को तौफ़े अता किए।"

शाहीन ख़ान साहिब जमाअत Queens से आए थे। उनकी अहलिया बात करते हुए रो पड़ीं। बोलीं: "हमारी ख़ुशी बयान से बाहर है। हम बारह–तेरह साल जुदा रहे। शौहर अमेरिका आ गए और वहाँ पनाह की दरख़्वास्त दी। जब केस पास हुआ तो हम भी आए और आज हमारी पूरी फ़ैमिली को हज़ूर से मुलाक़ात का मौक़ा मिल गया। हमारे दिल ख़ुशी से भर गए हैं और हम कुछ कह नहीं पा रहे हैं।"

मुलाक़ातों का प्रोग्राम दोपहर 1 बजे तक जारी रहा।

जमाअत अमेरिका के मुबल्लीग़ीन की मुलाक़ात

इसके बाद, तय कार्यक्रम के अनुसार हज़ूर अनवर मीटिंग हॉल में तशरीफ़ लाए जहाँ जमाअत अमेरिका के मुबल्लीग़ीन की हज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। (तफ़्सीली रिपोर्ट यहाँ देखें)। यह मीटिंग दोपहर 2 बजे तक जारी रही।

फिर 2 बजकर 20 मिनट पर हज़ूर अनवर ने मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़ लाकर नमाज़े ज़ोहर व अस्र एक साथ अदा करवाईं।

निकाहों की घोषणाएँ

नमाज़ों के बाद हज़ूर अनवर ने निम्नलिखित 14 निकाहों की घोषणा फ़रमाई:

1. अज़ीज़ा आइशा सलाहुद्दीन बिन्ते श्रीमान सलाहुद्दीन नासिर साहिब का निकाह अज़ीज़म उसामा ख़लील सोलंगी इब्ने श्रीमान ख़लील अहमद सोलंगी साहिब (शहीद) से।

2. अज़ीज़ा बासिरा बशीर बिन्ते श्रीमान बशीर अहमद चौधरी साहिब का निकाह अज़ीज़म अहमद तारिक इब्ने श्रीमान चौधरी महमूद अहमद साहिब से।

3. अज़ीज़ा फिज़ा रमज़ान बिन्ते श्रीमान मुहम्मद रमज़ान साहिब (मरहूम) का निकाह अज़ीज़म नासिर अहसन इब्ने श्रीमान मियाँ मनव्वर अहमद साहिब से।

4. अज़ीज़ा इफ़्त जहाँ बिन्ते श्रीमान डॉक्टर सैयद तनवीर अहमद साहिब का निकाह अज़ीज़म शहज़ाद सफदर अली इब्ने श्रीमान सफदर अली साहिब से।

5. अज़ीज़ा माइरा अहमद बिन्ते श्रीमान डॉक्टर मुहम्मद अहमद अशरफ़ साहिब का निकाह अज़ीज़म मिर्ज़ा माजिदुल अहमद इब्ने श्रीमान मिर्ज़ा नसीर अहमद साहिब से।

6. अज़ीज़ा सबीहा अनम बिन्ते श्रीमान अहमद मुहम्मद ख़ान साहिब का निकाह अज़ीज़म ग़ज़ाली वासे इब्ने श्रीमान अब्दुल वासे साहिब से।

7. अज़ीज़ा सोफ़िया सईद बिन्ते श्रीमान असद सईद साहिब का निकाह अज़ीज़म मुईज़ अहमद आराईं इब्ने श्रीमान वसीम अहमद आराईं साहिब से।

8. अज़ीज़ा सुलताना नासिरा बिन्ते श्रीमान सैयद अहमद ख़ुंदकर साहिब का निकाह अज़ीज़म अबू मूसा तारिक इब्ने श्रीमान मुहम्मद अबुल हुसैन ख़ान साहिब से।

9. अज़ीज़ा वजिहा अहमद बिन्ते श्रीमान दाऊद अहमद साहिब का निकाह अज़ीज़म सैयद अदनान अहमद इब्ने श्रीमान सैयद आतिफ़ नदीम साहिब से।

10. अज़ीज़ा ज़ारा सलमान मिर्ज़ा बिन्ते श्रीमान अनीस अहमद मिर्ज़ा साहिब का निकाह अज़ीज़म मुहम्मद ख़ालिद रज़ाक इब्ने श्रीमान मियाँ ज़फ़र अहमद रज़ाक साहिब से।

11. अज़ीज़ा नाइला अंबरिन साकिब बिन्ते श्रीमान मनव्वर अहमद साकिब साहिब का निकाह अज़ीज़म ताहर महमूद इब्ने श्रीमान मुजाहिद महमूद साहिब से।

12. अज़ीज़ा अमीरा मुबारक बिन्ते श्रीमान मुबारक अहमद नसीम साहिब का निकाह अज़ीज़म दानियाल महमूद (तलिबे इल्म, जामिया अहमदिया कनाडा) इब्ने श्रीमान मुहम्मद महमूद साहिब से।

13. अज़ीज़ा आमना रियाज़ बिन्ते श्रीमान रियाज़ अहमद बसरा साहिब (शहीद, घटियालियाँ) का निकाह अज़ीज़म मुहम्मद वक़ास अहमद बसरा इब्ने श्रीमान नवीद अहमद बसरा साहिब से।

14. अज़ीज़ा मीराल फ़ातिमा बिन्ते श्रीमान मुहम्मद मुबश्शिरुल्लाह चौधरी साहिब का निकाह अज़ीज़म उमर फ़ारूक़ इब्ने श्रीमान सईद फ़ारूक़ चौहान साहिब से।

आख़िर में हज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और फिर अपनी रहाइशगाह तशरीफ़ ले गए।

नॅशनल आमिला जमाअत अहमदिया अमेरिका की मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार शाम 6 बजे हज़ूर अनवर मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए और नॅशनल मजलिस आमिला जमाअत अहमदिया अमेरिका के साथ मीटिंग शुरू हुई। (तफ़्सीली रिपोर्ट यहाँ देखें)। यह मीटिंग शाम 7:30 बजे तक जारी रही। मीटिंग के अंत में सभी आमिला के मेंबर्स को हज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य मिला।

ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट यूएसए की इंतेज़ामी कमेटी की मुलाक़ात

इसके बाद हज़ूर अनवर अपने दफ़्तर में तशरीफ़ ले गए जहाँ ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट यूएसए की इंतेज़ामी कमेटी की हज़ूर अनवर से मीटिंग हुई। (तफ़्सीली रिपोर्ट यहाँ देखें)। मीटिंग के आख़िर में मेंबर्स को हज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फोटो खिंचवाने की सआदत हासिल हुई।

इसके बाद हज़ूर अनवर ने मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाकर नमाज़े मगरिब व ईशा जमा करके अदा करवाईं। नमाज़ों के बाद हज़ूर अनवर अपनी रहाइशगाह तशरीफ़ ले गए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

जो शरारतों में डूबे हुए थे, हत्या और निर्वासन की योजनाएँ बना रहे थे वे सब के सब नष्ट हो गए, और जो बचे, उन्हें विनम्रता और विनती के साथ अपनी गलतियों को स्वीकार कर माफ़ी माँगनी पड़ी।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 63, संस्करण 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

अगर हम आगे इस शब्द के इश्तिक़ाक़ (व्युत्पत्ति) पर जाएँ तो "سَلُم" शब्द "سَمَّلُ"बन जाएगा, जिसका अर्थ है सुलह कराना और हौज़ (तालाब) से गंदगी निकालकर उसे साफ़ करना।

"لَمُسٌّ" का अर्थ होता है छूना और इसमें भी सुरक्षा का अर्थ सम्मिलित है, क्योंकि इंसान जिन चीज़ों को संरक्षित करता है, उन्हें अपने हाव-भाव और इंद्रियों द्वारा करता है, जिनमें एक स्पर्श भी है।

"مَسَلَ الْمَاءُ" का अर्थ है पानी बह निकला जब पानी बह कर खेत में पहुँचता है तो खेत की रक्षा करता है और उसे सूखने से बचाता है।

फिर "لَسُمٌّ" शब्द है, जिसका अर्थ होता है चुप रहना और यह कहावत प्रसिद्ध है: “निकली होंठों, चढ़ी कोठों।” अर्थात जो सुरक्षा और शांति चुप्पी में प्राप्त होती है, वह हर कोई जानता है।

"مَلُسٌّ" मुनाफ़िक़ाना व्यवहार (मदाहनत) को कहते हैं और इसका उद्देश्य भी यही होता है कि किसी के शर से मीठी बातों द्वारा इंसान सुरक्षित हो जाए।

तो इन तीनों अक्षरों (س-ل-م) के किसी भी क्रम में प्रयोग होने से अरबी भाषा में उनके अर्थ सुरक्षा से ही संबंधित होते हैं।

इस प्रकार "इस्लाम" का अर्थ हुआ ऐसे कार्य करना जिनसे इंसान विनाश से सुरक्षित हो जाए। अर्थात इस नाम में ही अल्लाह तआला ने हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बअसत का उद्देश्य स्पष्ट कर दिया है कि लोग अल्लाह के ग़ज़ब से सुरक्षित हो जाएं और आपसी लड़ाई-झगड़ों से मुक्ति पा लें।

यानी एक ओर तो उनका अल्लाह तआला से मज़बूत संबंध स्थापित हो जाए और दूसरी ओर वे मानव जाति से ऐसा अच्छा व्यवहार करें कि उनमें आपसी प्रेम और एकता उत्पन्न हो जाए, और दुनिया से फ़साद और फितना समाप्त हो जाए। और एक सच्चा धर्म इन्हीं दो उद्देश्यों को समेटे होता है एक ओर वह अल्लाह से संबंध को मज़बूत करता है और दूसरी ओर वह इंसानियत के प्रति दया और करुणा की ओर ध्यान दिलाता है।

और जब उसके शिक्षण के परिणामस्वरूप लोगों का संबंध अल्लाह से भी जुड़ जाए और मानवता से भी वे दया करने लगें, तो न तो उन्हें अल्लाह की ओर से कोई नाराज़गी का डर रह सकता है, और न ही मानव जाति की ओर से कोई खतरा। और इस प्रकार वे आध्यात्मिक और भौतिक, दोनों दृष्टियों से सुरक्षित हो जाते हैं।

अतः इस नाम (इस्लाम) में ही अल्लाह तआला ने धर्म की पूरी सच्चाई को बयान कर दिया है, और बताया है कि इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जिसमें अल्लाह के अधिकार भी पूर्ण रूप से अदा किए गए हैं, और मानव जाति के अधिकारों का भी पूरी तरह ध्यान रखा गया है।

(तफसीर-ए-कबीर, जल्द 6, पृष्ठ 108 से 109, संस्करण क़ादियान 2010)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मक्तूब दिनांक 22 जुलाई 2021 में इस बारे में निम्नलिखित उसूली हिदायतें प्रदान कीं। हज़ूर ने फ़रमाया:

उत्तर: आप एक मुर्ब्बी भी हैं और आपको यह भी नहीं पता कि क़ुरआन करीम की कोई आयत मंसूख़ नहीं हो सकती। आपके प्रश्न से तो यह प्रतीत होता है कि आपने न तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अध्ययन किया है, न ही हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु की किताबों का, और न ही आप ख़ुलफ़ा-ए-अहमदियत के ख़ुत्बात या तक़ारीर सुनते हैं। बल्कि आपको तो जमाअत के बुनियादी अकीदे का भी इल्म नहीं, जो आप यह पूछ रहे हैं कि क्या क़ुरआन करीम की यह आयत मंसूख़ हो गई है?

क्योंकि जमाअत अहमदिया का बुनियादी अकीदा है कि क़ुरआन करीम अल्लाह तआला का ऐसा कलाम है जिसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी स्वयं अल्लाह ने ली है और बिस्मिल्लाह की "ब" से लेकर "वाल्नास" की "स" तक की पूरी इबारत अल्लाह के इज़्न से महफ़ूज़ और गैर-मुतगय्यिर है, और उसका एक नुक्ता तक मंसूख़ नहीं हो सकता। और जिस तरह आज से 1400 साल पहले क़ुरआन करीम क़ाबिल-ए-अमल था, आज भी वैसा ही है और इंशाअल्लाह क़यामत तक क़ाबिल-ए-अमल रहेगा।

हाँ, यह बात सही है कि क़ुरआन करीम के कुछ अहकाम कुछ विशेष परिस्थितियों से संबंधित होते हैं। हज़रत रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में जब वे परिस्थितियाँ थीं, तो वे अहकाम लागू होते थे। भविष्य में अगर वैसे ही हालात फिर से पैदा होते हैं, तो वे अहकाम फिर लागू होंगे। इस आयत में जिन लौंडियों का ज़िक्र है, उनके बारे में भी यही स्थिति है।

एक मुर्ब्बी का काम सिर्फ यह नहीं है कि वह केवल प्रश्न करके अपने मसायल हल कर ले या कोई बात जानने के लिए सिर्फ गूगल सर्च का सहारा ले। बल्कि एक मुर्ब्बी को खुद तहक़ीक़ करके अपने इल्म में इज़ाफा करने की आदत होनी चाहिए और उसका इल्म पुख़्ता और गहरा होना चाहिए। उसे इल्मी और जमाअती किताबों पर गहरी नज़र होनी चाहिए, उसे सोचना और गौर करके नए-नए इल्मी नुक्ते निकालने की आदत होनी चाहिए।

जहाँ तक उक्त आयत में वर्णित औरतों का संबंध है, तो इसका तआल्लुक़ इस्लाम के आरंभिक युग से है जब दुश्मन-ए-इस्लाम मुसलमानों पर तरह-तरह के जुल्म करते थे, और यदि किसी गरीब मजलूम मुसलमान की औरत उनके हाथ लग जाती थी, तो वे उसे अपनी औरतों में लौंडी बनाकर शामिल कर लेते थे। अतः *"जज़ाऊ सयीअतिन सयीअतुन मिसलुहा" (अश-शूरा: 41)* की क़ुरआनी शिक्षा के अनुसार दुश्मन की वे औरतें, जो इस्लाम पर हमला करने वाले लश्कर के साथ उनकी मदद के लिए आती थीं और उस समय के रिवाज के अनुसार जंग में लौंडी बना ली जाती थीं, अगर वे फिर फिरौती अदा करके या मुकातबत के ज़रिए आज़ादी नहीं लेती थीं, तो उस समय राज्य की कोई जेलें नहीं होती थीं, अतः उन्हें मुजाहिदीन में बाँट दिया जाता था। ये मुजाहिदीन जहाँ उनकी रिहाइश, खाना और कपड़े की आवश्यकताओं का ख्याल रखते थे, वहीं बदले में उस दौर के दस्तूर के अनुसार उन्हें उन औरतों से लाभ उठाने का पूरा हक़ होता था जिसमें जिस्मानी संबंध भी शामिल थे।

अतः इस आयत में दुश्मन की उन्हीं औरतों का ज़िक्र है कि अगर वे उपरोक्त परिस्थितियों में मुसलमानों के कब्जे में आती हैं, तो चाहे वे विवाहित हों या अविवाहित, लौंडी की हैसियत से उनसे वैवाहिक संबंध स्थापित करने की अनुमति है।

मैं यहाँ यह भी स्पष्ट कर दूं कि क़ुरआन करीम, हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के फरामीन की रौशनी में मेरा मत है कि ऐसी औरतों से एक प्रकार के निकाह के बाद ही वैवाहिक संबंध स्थापित किए जा सकते थे। लेकिन इस निकाह के लिए उस लौंडी की रज़ामंदी ज़रूरी नहीं होती थी, और न ही इस निकाह के लिए शरई तौर पर किसी वली की रज़ामंदी आवश्यक होती थी। बल्कि जिस तरह बहुत से क़बीलों और समाजों में यह तरीका प्रचलित रहा है और आज भी कुछ देशों में यह रिवाज है कि समाज में केवल यह घोषणा कर दी जाती है कि हम पति-पत्नी हैं और यही एक प्रकार का ऐलान-ए-निकाह होता है, उसी प्रकार उपरोक्त प्रकार की लौंडी का किसी मुजाहिद के हिस्से में आना दोनों के बीच निकाह की घोषणा होती थी। ऐसी लौंडी से इस प्रकार के निकाह के परिणामस्वरूप पुरुष को चार शादी की अनुमति पर कोई असर नहीं पड़ता था, अर्थात एक पुरुष चार शादियाँ करने के बाद भी उपरोक्त प्रकार की लौंडी से संबंध बना सकता था। हां, यदि उस लौंडी से बच्चा पैदा हो जाता था, तो वह "उम्मुल्-वलद" के तौर पर आज़ाद हो जाती थी।

★ ★ ★

क्या ईद-उल-अज़्हा के मौके पर मृतकों के नाम पर जानवर की कुर्बानी दी जा सकती है?
क्या हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अलैहिमस्सलाम) सगे भाई थे? और जब फिरऔन बनी इस्राईल के सभी लड़कों को कत्ल करवा देता था, तो हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) कैसे ज़िंदा बचे?
मुराक़बा और इसके बारे में हज़रत मसीह मौउद (अलैहिस्सलाम) की शिक्षाएँ और तरीका इस संबंध में मार्गदर्शन।
अगर हवा निकलने से वुज़ू टूट जाए, तो क्या नमाज़ के लिए फिर से वुज़ू करने से पहले इस्तिंजा करना ज़रूरी होता है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-38)

प्रश्न: इंडोनेशिया से एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछा कि क्या ईद-उल-अज़्हा के मौके पर मृतकों के नाम पर जानवर की कुर्बानी दी जा सकती है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 08 जून 2021 को इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया:

उत्तर: मृतकों की ओर से कुर्बानी करने में कोई हर्ज नहीं है, बल्कि यह तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। अतः हदीसों में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ईद-उल-अज़्हा के मौके पर एक कुर्बानी अपनी और अपने परिवार की ओर से किया करते थे और एक कुर्बानी अपनी उम्मत की ओर से किया करते थे। और आपकी उम्मत में ऐसे बहुत से सहाबी भी थे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवनकाल में शहीद हो चुके थे और वे भी आपकी ओर से की गई उस कुर्बानी में शामिल होते थे।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल-अदाही; मुस्नद अहमद बिन हंबल, मुस्नदुल-अंसार मिन मुस्नदिल-कबाइल, हदीस नंबर 25937)

इसके अतिरिक्त हदीस में यह भी वर्णित है कि एक व्यक्ति ने हज़रत अली (रज़ि.) को दो जानवरों की कुर्बानी करते हुए देखा तो इसका कारण पूछा। इस पर हज़रत अली (रज़ि.) ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे वसीयत की थी कि मैं उनकी ओर से कुर्बानी किया करूँ। इसलिए मैं एक जानवर आपकी ओर से कुर्बान करता हूँ।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-अदाहि, बाबुल-अज़हिया अनिल-मय्यित)

हज़रत मसीह मौउद के दूसरे खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (रज़ि.) ने हज़रत खलीफ़तुल-मसीह अव्वल (रज़ि.) के प्रति अपने दिल में जो स्थान और मोहब्बत थी, उसका ज़िक्र करते हुए एक बार कहा: ''हज़रत खलीफ़तुल-मसीह अव्वल की वफ़ात को 42 साल हो चुके हैं, लेकिन मैं हर कुर्बानी के मौके पर आपकी ओर से कुर्बानी करता हूँ... फिर जब मैं हज पर गया तो उस समय भी आपकी ओर से कुर्बानी की थी और अब तक हर ईद के मौके पर आपकी ओर से कुर्बानी करता चला आया हूँ।''

(अनवारुल-उलूम, जिल्द 25, पृष्ठ 468)

इसलिए मृत प्रियजनों और संबंधियों की ओर से ईद-उल-अज़्हा के मौके पर कुर्बानी करना ऐन सुन्नत-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है।

प्रश्न: एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखकर पूछा कि क्या हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अलैहिमस्सलाम) सगे भाई थे? और जब फिरऔन बनी इस्राईल के सारे लड़कों को कत्ल करवा देता था, तो हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) कैसे ज़िंदा बच गए? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 13 जून 2021 को इस प्रश्न का निम्न उत्तर दिया:

उत्तर: बाइबिल के अनुसार हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अलैहिमस्सलाम) सगे भाई थे। वहाँ लिखा है: ''और अमराम ने अपने पिता की बहन यूक़बद से विवाह किया जिससे उसके बेटे हारून और मूसा पैदा हुए। और अमराम 137 वर्ष तक जीवित रहा... और यही हारून और मूसा हैं जिन्हें ख़ुदावंद ने हुक्म दिया था कि बनी इस्राईल को उनके दलों के अनुसार मिस्र से निकाल ले जाओ। यही वे हैं जिन्होंने बनी इस्राईल को मिस्र से निकालने के लिए फिरऔन से बात की थी।''

(खरूज, अध्याय 6, आयत 20 और 27,26)

बाइबिल के अनुसार हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) से बड़े थे। वहाँ लिखा है कि ''मूसा 80 वर्ष का और हारून 83 वर्ष का था जब वे फिरऔन से बातचीत करने गए।''

(खरूज, अध्याय 7, आयत 7)

फिरऔन ने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म के समय अपने स्वप्न के कारण ज्योतिषियों और भविष्यवक्ताओं के परामर्श से इब्रानियों के बच्चों के कत्ल का आदेश दिया था। चूंकि हज़रत हारून पहले ही जन्म ले चुके थे, इसलिए वे जीवित बच गए।

हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) के जीवित बचने का एक और कारण बाइबिल में यह लिखा गया है कि हज़रत याक़ूब और हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का ज़माना गुज़र जाने के बहुत समय बाद जब बनी इस्राईल की संख्या इतनी बढ़ गई कि देश उनसे भर गया, तो उस समय के राजा ने डर के मारे उनके ऊपर तरह-तरह की सख्तियाँ शुरू कर दीं। लेकिन जितना उन्हें सताया गया, उतनी ही उनकी संख्या में बढ़ोत्तरी होती गई। अतः मिस्र के राजा ने दाइयों को हुक्म दिया कि अगर इस्राईली औरत के यहाँ लड़का पैदा हो तो उसे मार देना और अगर लड़की हो तो उसे जीवित रहने देना। लेकिन दाइयों ने राजा के आदेश का पालन नहीं किया।

(उद्धृत: खरूज, अध्याय 1, आयत 7 से 17)

इसके अतिरिक्त तफसीरों (कुरआन की व्याख्याओं) में भी लिखा है कि मिस्री लोग बनी इस्राईल से बेगार का काम करवाते थे, इसलिए एक साल बच्चों को ज़िंदा रखते थे और एक साल कत्ल करवा देते थे, ताकि उनकी संख्या न बढ़े लेकिन मज़दूरी के लिए मज़दूर मिलते रहें। हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) का जन्म उस वर्ष हुआ था जिसमें बनी इस्राईल के बच्चों को जीवित रखा गया था।

(मआलिमुत-तंजील (तफ़्सीर अल-बग़वी), लेखक अबू मुहम्मद हुसैन बिन मसऊद, सूरह अल-बक़रा, आयत 50 के अंतर्गत)

इस प्रकार हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) के जीवित रहने की विभिन्न वजहें बाइबिल और तफ़सीरों में बयान की गई हैं।

प्रश्न: एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुराक़बा और इस विषय में हज़रत मसीह मौउद (अलैहिस्सलाम) की शिक्षाओं और तरीक़े के बारे में पूछा। हज़ूर अनवर ने अपने मकतूब दिनांक 13 जून 2021 में इस विषय में निम्नलिखित निर्देश दिए। हज़ूर अनवर ने फरमाया:

उत्तर: मुराक़बा का सामान्य अर्थ ध्यान लगाना, एकाग्रता और अपने कार्यों पर चिंतन करना होता है। यह आदत केवल इंसानों में ही नहीं, बल्कि जानवरों में भी पाई जाती है। अतः हज़रत मसीह मौउद (अलैहिस्सलाम) हज़रत जुनेद रहमतुल्लाह अलैह के बारे में फरमाते हैं कि वे फर...

उत्तर : ध्यान (मुराक़बा) का अर्थ सामान्यतः एकाग्रता, संकल्प और अपने कर्मों पर विचार करना होता है। यह आदत केवल इंसानों में ही नहीं, बल्कि जानवरों में भी पाई जाती है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैह के बारे में फरमाते हैं कि वह कहा करते थे, "मैंने ध्यान बिल्लियों से सीखा है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 147, मुद्रित 2016)

मुराक़बे की प्रक्रिया जहाँ मुस्लिम औलिया और सूफ़ियों का एक विशेष अभ्यास रही है, वहीं इस्लाम के अलावा अन्य धर्मों में भी अपने-अपने ढंग से इसका उल्लेख मिलता है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु यहूदियों के "एसीन" (Essene) फ़िर्क़े जिन्हें फ़रीसी भी कहा जाता था के बारे में "एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका" के हवाले से लिखते हैं कि ये लोग रोज़े रखते थे और बहुत पवित्र जीवन जीते थे। वे ग़ैब की बातें बताते थे और... इबादत के समय ध्यान लगाते थे ताकि उनकी आत्मा का संबंध स्वर्गीय पिता से जुड़ जाए।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 01 May 2025 Issue No. 18

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 4, पृष्ठ 384, कॉलम नंबर 2)

इस्लामी इबादतों का मुख्य उद्देश्य यही है कि इंसान और ख़ुदा के बीच गहरा संबंध स्थापित हो। अतः नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक सवाली के जवाब में 'एहसान' की परिभाषा करते हुए फ़रमाया: "أَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ" यानी, तुम्हें अल्लाह की इबादत इस प्रकार करनी चाहिए जैसे तुम उसे देख रहे हो, लेकिन यदि यह भावना न बन सके, तो कम से कम यह समझो कि वह तुम्हें देख रहा है।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब सवाल-ए-जिबरील अन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

इबादत की ये दोनों अवस्थाएँ मुराक़बे की ही शकलें हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ की हिकमत बयान करते हुए फ़रमाते हैं: "दरअसल नमाज़ में यह बताया गया है कि इंसानी रूह के कमाल के लिए तीन चीज़ें ज़रूरी हैं दूसरों के साथ सहयोग, नसीहत व याददिहानी और ध्यान (मुराक़बा)। ध्यान की जगह वे खामोश नमाज़ें होती हैं जिनमें इंसान अपनी आवश्यकता के अनुसार एकाग्रता से दुआ करता है।"

(रोज़नामा अल-फ़ज़्ल, क़ादियान, 5 सितम्बर 1936, पृष्ठ 4)

मुराक़बे की प्रक्रिया और लाभ बताते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: "हमारे देश में यह स्थिति है कि हम हर विषय पर ऐसे कूदते हैं जैसे बंदर पेड़ पर कूदता है। एक विचार आता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा, फिर चौथा हम एक जगह टिकते ही नहीं। इस वजह से क़ुरआनी और हदीसी शिक्षाओं की महान बातें हमारे भीतर समा नहीं पातीं, क्योंकि हम तुरंत ही आगे बढ़ जाते हैं। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसका इलाज मुराक़बे को बताया है और सूफ़ियों ने इस पर अमल के विभिन्न तरीके निकाले हैं, लेकिन इस भौतिक युग में इसकी परवाह कौन करता है?... हमारे उलमा ने वह उपाय नहीं अपनाया। और वह उपाय यह था कि कुरआन और हदीस की उन शिक्षाओं को बार-बार ज़ेहन में लाया जाए जो इन विषयों से संबंधित हैं, जिसे मुराक़बा कहते हैं, और बार-बार लोगों के सामने उन्हें पेश किया जाए। मगर हमारे यहाँ तो केवल यह कहा जाता है कि नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रखो, यूँ सज्दा करो, यूँ ढीला इस्तेमाल करो—कम से कम सात बार पत्थर से खास हरकतें न की जाएँ तो ढीले का इस्तेमाल सही नहीं माना जाता। यानी या तो सतही बातों पर ज़ोर होता है या रस्मों पर। और जो असली मक़सद इन हुक्मों के पीछे है, उसे पूरी तरह नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।"

(अनवारुल उलूम, जिल्द 24, पृष्ठ 515)

जमाअत के अज़ीज़ों को मुराक़बे की ताकीद करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: "तुम्हें चाहिए कि हर रोज़ कुछ समय खामोशी से अल्लाह के ज़िक्र या मुराक़बे के लिए खर्च करने की आदत डालो। अल्लाह के ज़िक्र का मतलब यह है कि नमाज़ों के अलावा रोज़ाना थोड़ा समय चाहे शुरुआत में पाँच मिनट ही क्यों न हो ख़ास तौर पर तय किया जाए, जिसमें तन्हाई में खामोश बैठकर तसबीह व तहमीद की जाए। मसलन, 'सुब्हान अल्लाह', 'अल्हम्दुलिल्लाह', 'अल्लाहु अकबर' और इसी तरह अल्लाह की अन्य विशेषताओं का विर्द किया जाए और उन पर विचार किया जाए।

मुराक़बे का मतलब यह है कि इंसान रोज़ कुछ देर के लिए अकेले में बैठकर अपने नफ़्स का मुहासिबा करे कि उस से कौन-कौन सी ग़लतियाँ हो चुकी हैं। क्या वह उन्हें दूर कर सकता है या नहीं? अगर कर सकता है तो अब तक क्यों नहीं कीं? अगर नहीं कर सकता तो उसकी वजहें क्या हैं और उनका क्या इलाज हो सकता है? फिर आगे सोच सकता है कि अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों की इस्लाह की क्या सूरत हो सकती है? तब्लीग के कौन-कौन से असरदार तरीके हो सकते हैं? कौन-कौन सी रुकावटें हैं और उन्हें किस तरह दूर किया जा सकता है? इस प्रकार के आत्मविश्लेषण का जो भी परिणाम निकले, उसे डायरी में लिखा जाए और इसी क्रम को आगे बढ़ाया जाए।

अगर इस प्रकार अल्लाह के ज़िक्र और मुराक़बे की आदत डाली जाए, तो यक़ीनन इससे रूहानियत में तरक़्क़ी होगी, अक़्ल तेज़ होगी और इमाम-ए-वक़्त की हिदायतों और तक़ारीर पर गहराई से ग़ौर करने और उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ मिलेगी। ऐसा व्यक्ति धीरे-धीरे इस हद तक पहुँच जाएगा कि वह दुनिया के लिए एक रूहानी डॉक्टर और इस्लाह करने वाला बन जाएगा।"

(अनवारुल उलूम, जिल्द 23, पृष्ठ 61-62)

हुक्म व अद्ल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने अनुयायियों के लिए मुराक़बा का वास्तविक तरीका और उसके लाभ बताते हुए फ़रमाते हैं: ‘‘तुम अपने समस्त शरीर, आत्मा और जीवन के साथ अल्लाह तआला के हो जाओ। फिर अल्लाह तआला स्वयं ही तुम सबका संरक्षक, सहायक, सहायता करने वाला और कार्य साधक बन जाएगा। चाहिए कि इंसान की समस्त शक्तियाँ आंख, कान, दिल, दिमाग, हाथ-पांव सभी अल्लाह से जुड़ जाएं। इनमें किसी प्रकार का विरोध या विभाजन न रहे। इसी में सारी सफलताएँ और विजय छुपी हुई हैं। यही असली मुराक़बा है, इसी से दिली गर्मी और रूहानियत पैदा होती है और इसी की बदौलत पूर्ण ईमान हासिल होता है।’’

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 320, संस्करण 2016)

प्रश्न: एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखकर पूछा कि अगर हवा निकल जाने से वुज़ू टूट जाए तो क्या नमाज़ के लिए दोबारा वुज़ू करने से पहले इस्तिंजा करना ज़रूरी होता है?

उत्तर: हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मक्तूब दिनांक 22 जुलाई 2021 में इस विषय का निम्नलिखित उत्तर दिया:

उत्तर: हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत और जहाँ आपने वुज़ू की विवरण दिया है, उनमें कहीं भी वुज़ू से पहले इस्तिंजा करने का ज़िक्र नहीं है। इसलिए केवल हवा निकलने से वुज़ू टूटने पर नमाज़ के लिए दोबारा वुज़ू करते समय इस्तिंजा करना ज़रूरी नहीं है। हां, अगर हवा के साथ गंदगी या पेशाब भी निकल आए, तो फिर वुज़ू से पहले इस्तिंजा करना ज़रूरी है, ताकि निकली हुई गंदगी को धोया जा सके। अन्यथा एक बार क़ज़ा-ए-हाजत से फारिग होकर इस्तिंजा करने के बाद जब वुज़ू कर लिया जाए, तो उसके बाद सिर्फ हवा निकलने पर वुज़ू दोहराते समय इस्तिंजा करना आवश्यक नहीं।

प्रश्न: एक मुर्ब्बी साहिब ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखकर पूछा कि क़ुरआन करीम की आयत *"वल-मुहसनातु मिन निसा इल्ला मा मलकत अईमानुकुम"* में कौन-सी औरतें मुराद हैं और क्या उनके पतियों के होते हुए भी उनसे निकाह किया जा सकता है? या यह आयत किसी विशेष समय के लिए थी? और क्या अब यह आयत मंसूख़ हो गई है?

शेष पृष्ठ 10 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
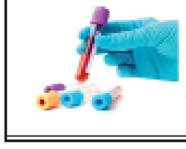
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad